ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

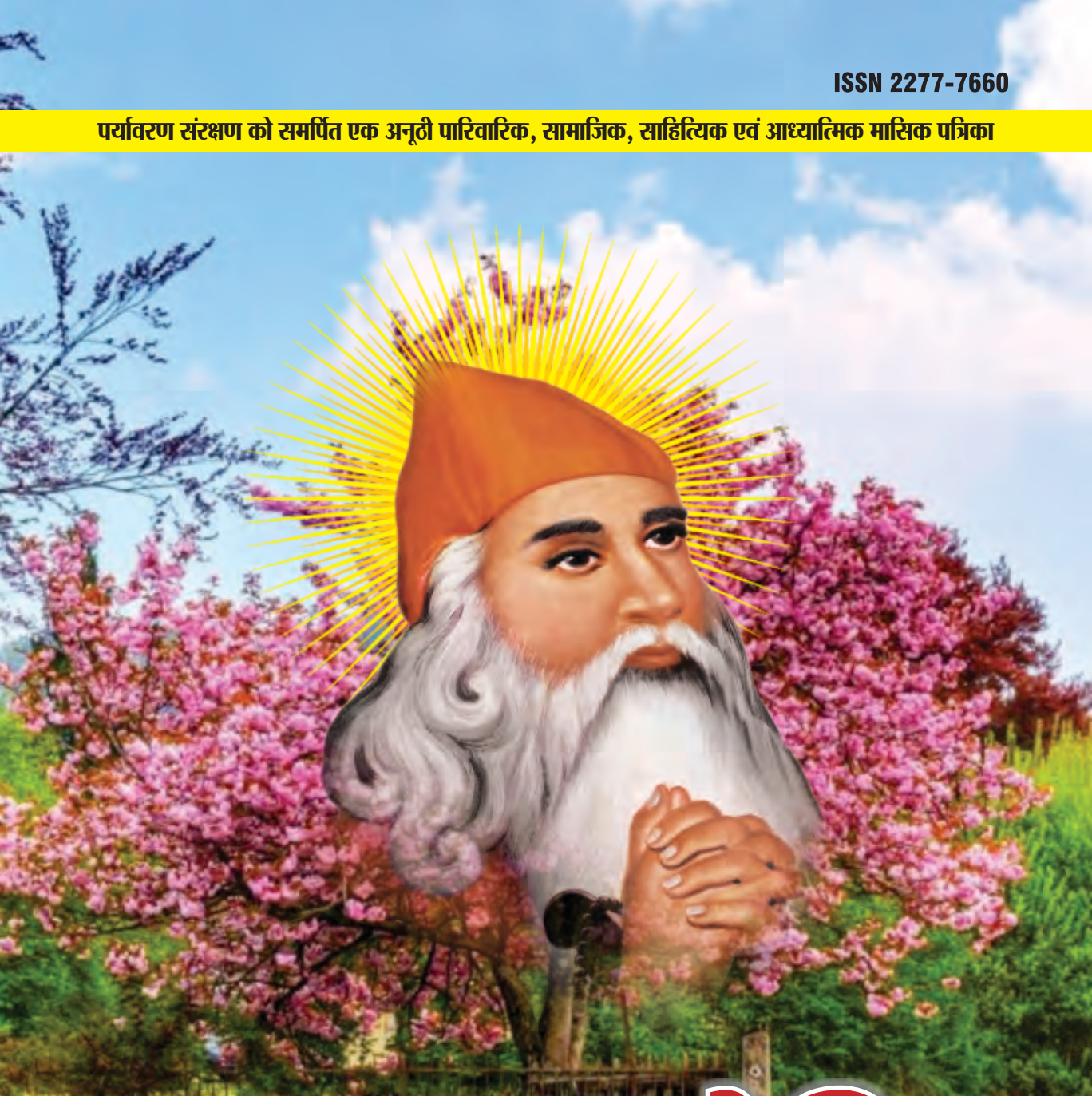

अमर ज्योति

वर्ष : 74 | मई, 2023 | अंक : 5 | मूल्य : 150 रु. (वार्षिक)

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. मनबीर

सह संपादक
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
दूरभाष : 80590-27929
8168178429
94670-90729
email: editoramarjyotipatrika@gmail.com
editor@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 150
25 वर्ष : ₹ 1300

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-6	3
पतन के कारण	4
सम्पादकीय	5
साखी	6
कविता: सार जीवन का	6
जाम्भाष्टक (अर्थ सहित)	7
कृष्ण काव्य में जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति	9
पर्यावरण संरक्षण में अगुवा रहा है- बिश्नोई समाज	14
जाम्भोजी का भ्रमण करना	16
हरजस	19
कविता: तरू हित देह कटाई दी	20
बधाई सन्देश	21
परलोक-विचार	22
बिश्नोई लोकगीत: संस्कार गीत- मृत्यु के गीत (भाग-2)	26
बाल काव्य: प्रेम समर्पण चाहै, बस इतना करना	29
धार्मिक और सामाजिक पत्रकारिता के हमनवा थे सहीराम जौहर	30
शिक्षा से नारी का सशक्तीकरण सम्भव	34
कविता: मैं भी तेंदुलकर बनूंगा	36
करियर: 12वीं के बाद बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई के विभिन्न...	37
ग्रीष्मकालीन अवकाश में आयोजित होंगे जाम्भाणी संस्कार शिविर	40
सामाजिक हलचल	41-42

सबद-6

दोहा

उधरण कान्हावत यों कहे, दोय कहै छै देव।
भिन्न भिन्न समझाइयों, हमें बतावों भेव।

उधरण राजपुत्र ने इससे पूर्व तीन सबदों को ध्यानपूर्वक श्रवण किया, तब यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि जीव और ब्रह्म एक ही है या दो भिन्न-भिन्न है, इस शंका का समाधानार्थ उधरण ने प्रार्थना की। तब श्री देवजी ने यह सबदोच्चारण किया-

सबद-6

भवन भवन म्हें एका जोती, चुन चुन लिया रतना मोती।

भावार्थ- सम्पूर्ण चराचर सृष्टि के कण-कण में परम तत्त्व रूप परब्रह्म की सामान्य ज्योति सर्वत्र है अर्थात् प्रत्येक शरीर में स्थित जीवात्मा उसी एक परमात्मा का ही प्रतिबिम्ब है। जैसा बिम्ब रूप परमात्मा है वैसे ही प्रतिबिम्ब रूप जीव है, दोनों में कोई भेद नहीं है। यदि किसी को भेद मालूम पड़ता है तो वह केवल उपाधी के कारण ही हो सकता है। गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि जीव सभी एक होने पर भी तथा परमात्मा का अंश होने पर भी, हमारे जैसे अवतारी पुरुष सभी जीवों का उद्धार नहीं करते क्योंकि सभी जीव अब तक ईश्वर प्राप्ति की योग्यता नहीं रखते जो हीरा-मोती सदृश अमूल्य शुद्ध सात्विक सज्जनता को प्राप्त कर चुके हैं उन्हें ही हम परम धाम में पहुँचाते हैं।

म्हे खोजी थापण होजी नाही, खोज लहां धुर खोजूं।

हम खोजी हैं अर्थात् जिन जीवों के कर्मजाल समाप्त हो चुके हैं वे लोग अब परम तत्व के लिये बिल्कुल तैयार हैं उन्हें केवल सहारे की जरूरत है ऐसे जीवों की हम खोज करेंगे तथा चुन-चुनकर उन्हें परम सत्ता से साक्षात्कार करवायेंगे। हम होजी नहीं हैं अर्थात् अज्ञानी या ना समझ नहीं है। एक-एक कार्य बड़ी शालीनता से किया जायेगा जो सदा के लिये सद्मार्ग स्थिर हो जायेगा। सृष्टि के प्रारम्भिक काल से लेकर अब तक जितने भी जीव बिछुड़ गये हैं उन्हें प्रह्लादजी के कथनानुसार वापिस खोज करके सुख शांति प्रदान कराऊँगा। इसलिये मेरा यहाँ पर आगमन हुआ है।

अल्लाह अलेख अडाल अजोनी स्वयंभूं, जिहिं का किसा बिनाणी।

उस परम तत्त्व की प्राप्ति जीव करते हैं वह अल्लाह, माया रहित शब्द लेखन शक्ति से अग्राह्य, उत्पत्ति रहित, मूल स्वरूप, जो स्वयं अपने आप में ही स्थित है, उसका विनाश कैसे हो सकता है। इसलिये इस सिद्धान्त से विपरीत जो जन्मा हो, लेखनीय हो, डाल रूप हो, जो उत्पत्तिशील हो, उसका ही विनाश संभव है। इसलिये उस नित्य आनन्द स्वरूप परमात्मा को प्राप्त करके जीव भी नित्य आनन्द रूप ही हो जाता है।

म्हे सरै न बैठा सीख न पूछी, निरत सुरत सब जाणी।

जब उधरण ने पूछा कि हे देव! यह शिक्षा आपने कौन-सी पाठशाला में प्राप्त की, क्योंकि ऐसी विद्या तो हम भी सीखना चाहते हैं। तब जम्भेश्वर जी ने कहा- कि मैंने यह विद्या किसी पाठशाला में बैठकर नहीं सीखी। तो फिर कैसे जान गये? हे उधरण! मैने इसी प्रकृति की पाठशाला में बैठकर सुरति-वृत्ति को निरति यानि एकाग्र करके सभी कुछ जान लिया। पाठशाला में बैठकर तो सभी कुछ नहीं जाना जा सकता किन्तु उस सत्ता परमेश्वर के साथ वृत्ति को मिला लेने से सभी कुछ जाना जा सकता है। क्योंकि वह परम तत्त्व व्यापक होने से वृत्ति एकाग्र कर्त्ता जीव भी व्यापकत्व को प्राप्त हो जाता है और सभी कुछ जान लेता है। इसलिये आप भी मन वृत्ति को एकाग्र कीजिये और सभी कुछ जानिये।

उतपति हिन्दू जरणा जोगी, किरिया ब्राह्मण,
दिल दरवेसां, उनमुन मुल्ला, अकल मिसलमानी।

उत्पत्ति से तो सभी हिन्दू हैं क्योंकि जितने भी धर्म पंथ चले हैं उनका तो कोई न कोई समय निश्चित है। किन्तु हिन्दू आदि अनादि है, कोई भी संवत्

निश्चित नहीं है तथा मानवता जिसे हम कहते हैं वह पूर्णतया हिन्दू में ही सार्थक होती है इसलिये उत्पन्न होता हुआ बालक हिन्दू ही होता है। बाद में उसको संस्कारों द्वारा मुसलमान, ईसाई आदि बनाया जाता है। जिसके अन्दर जरणा अर्थात् सहनशीलता है वही योगी है। जिस प्राणी के अन्दर क्रिया, आचार-विचार, रहन -सहन पवित्र तथा शुद्ध है वही ब्राह्मण है। जिस मानव के अन्दर दिल व अन्त:करण शुद्ध, पवित्र, विशाल, राग द्वेष से रहित है वही दरवेश है। जिस मनुष्य ने मानसिक वृत्तियों को संसार से हटाकर आत्मस्थ कर लिया है वही मुल्ला है तथा जो इस संसार में बुद्धि द्वारा सोच-विचार के कार्य करता है वही मुसलमान हो सकता है क्योंकि मुसलमान पंथ संस्थापक ने अक्ल हीनों को अक्ल दी थी, जिससे यह पंथ स्थापित हुआ था। कोई भी जाति विशेष इन विशिष्ट कर्मों द्वारा ही निर्मित होती है। कर्महीन होकर केवल जन्मना जाति से कुछ भी लाभ नहीं है। यह तो मात्र पाखण्ड ही होगा।

-साभार 'जम्भसागर'

पतन के कारण

पाण्डवों को समय-समय पर भगवान् श्रीकृष्ण का मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता था। युधिष्ठिर धर्मशास्त्रों के अनुसार आचरण करने के कारण ही 'धर्मराज' कहलाते थे। वे अपने छोटे भाइयों को धर्मशास्त्रों का उपदेश देते हुए प्राय: कहते थे' अहंकार पतन का सबसे प्रमुख कारण होता है। अत: कभी भी अहंकार को पास नहीं फटकने देना चाहिए।

अंत समय में पांडव महाप्रस्थान के लिए हिमालय की ओर चले तो एक-एक करके सभी पृथ्वी पर गिर पड़े। भूमि पर पड़े भीम अपने अग्रज युधिष्ठिर से इसका कारण जानना चाहा। युधिष्ठिर ने बताया, 'भ्राता भीम, जिसकी जैसी करनी होती है, जिसे अहंकार हो जाता है, उसे फल तो भोगना ही पड़ता है। अर्जुन के प्रति विशेष पक्षपात होने के कारण द्रौपदी के पुण्य क्षीण हो गए। सहदेव अपने जैसा विद्वान और बुद्धिमान किसी को नहीं समझता था। नकुल किसी को भी अपने समान सुन्दर नहीं समझता था। अर्जुन को अपनी वीरता का अधिक अभिमान था और भीम, तुम अपना सच भी जान लो। दूसरों को कुछ न समझकर समय-समय पर अपने मुँह से अपने बल की डींगें हांकने के कारण तुम्हारे तमाम पुण्य क्षीण हुए तथा तुम्हारा पतन हुआ।'

भीम अंतिम समय में अपने भ्राता धर्मराज युधिष्ठिर के मुख से सत्य बातें सुनकर नतमस्तक हो उठे। दो घड़ी तक इन्द्र निर्मित माया रूपी नरक में रहने के बाद युधिष्ठिर सहित पांडव स्वर्ग चले गए।

साभार- **201 Motivational Kahaniyan**

पर्यावरण विशेषांक (जून 2023) के लिए आलेख भेजने बारे निवेदन

जैसाकि सभी सुधी लेखकों, रचनाकारों व पाठकों को विदित है कि हर वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'अमर ज्योति' पत्रिका द्वारा एक विशेष अंक(पर्यावरण विशेषांक) का प्रकाशन किया जाता है, उसी कड़ी में इस बार भी पत्रिका द्वारा **जून 2023** अंक **पर्यावरण विशेषांक** के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। इस अंक को अत्यधिक ज्ञानवर्धक, सूचनाप्रद, रोचक, सामयिक तथा प्रासंगिक बनाने के लिए आप सबका योगदान अतीव आवश्यक है। अत: सभी रचनाकारों व पाठकों से विनम्र अपील है कि वे पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं पर सारगर्भित, सामयिक महत्व की रचनाएं जो आध्यात्मिक एवं सामाजिक लेख, कहानी, कविता, संस्मरण, व्यंग्य समेत विभिन्न साहित्यिक विधाओं के रूप में हो सकती हैं, भेजने की कृपा करें। लेखक अपनी रचनाएं 15 मई 2023 तक टाईप या हस्तलिखित रूप में पत्रिका की ई-मेल editoramarjyotipatrika@gmail.com या व्हाटसअप नंबर **94670-90729** पर भेज दें, ताकि समय रहते उन्हें पत्रिका में उचित स्थान दिया जा सके।

-सम्पादक

संपादकीय

सहनशीलता

सहनशीलता मानवीय जीवनचर्या का एक अहम् अंग है। मानव जीवन में सहनशीलता को धारण करने के अवसर प्रत्येक क्षण आते रहते हैं। क्योंकि यह जीवन सुख-दु:ख, लाभ-हानि, अच्छाई-बुराई, जय-पराजय, सफलता-असफलता, हर्ष-शोक, राग-द्वेष, मान-अपमान, यश-अपयश आदि द्वंद्वों से भरा हुआ है। इन द्वंद्वों के आघात को जो सहर्ष ही सहन कर लेता है, सहनशील मनुष्य कहलाता है। गुरु जाम्भोजी ने अपनी दिव्य आचार संहिता में शील का पालन करना नियम के तहत सहनशीलता जैसे मूलभूत एवं महत्वपूर्ण आचार पर बल दिया है। गुरु जाम्भोजी ने स्वयं भी ताउम्र व समय-समय पर इस विशिष्ट भाव को धारण किए रखा था जिसका प्रमाण उन घटनाओं से मिलता है जिसमें अनेक लोगों ने उन्हें उकसाने, बहकाने व उग्र करने का असफल प्रयास किया था। जाहिर है सहनशीलता को मानवीय गुणों का सिरमौर माना गया है। इस गुण के अभाव में अन्य चारित्रिक विशेषताएं गौण होने लगती है। फिर बिश्नोई समाज तो इस मायने में अति विशिष्ट है क्योंकि समाज के मूलाधार भक्त प्रह्लाद थे जिन्होंने सहनशीलता की पराकाष्ठा से भी परे जाकर भी इसका त्याग नहीं करके इसकी महता व सार्थकता को प्रतिपादित किया था। इस तरह समाज में सहनशीलता का डीएनए तो युगों-युगों से चला आ रहा है। वर्ष 1730 का ऐतिहासिक खेजड़ली बलिदान भी समाज के इस चरित्र का सर्वोत्तम उदाहरण है। राजा के निष्ठुर सैनिकों के अत्यंत उकसावे व निर्दयी व्यवहार के बावजूद समाज के वे महान सेनानी उग्र नहीं हुए और सहनशीलता का परिचय देते हुए धर्म पालन की मर्यादा को उच्चतम शिखर पर ले गए जिसके कारण देश ही नहीं विश्व में इस महान बलिदान की बदौलत समाज की एक विशिष्ट पहचान बनी। बिश्नोई धर्म की मूल भावना सहनशीलता अथवा सहिष्णुता में ही निहित है।

विचारणीय पहलू है कि क्या वर्तमान पीढ़ी सहनशीलता की उस महान विरासत को संभाले हुए है या उससे यह खिसक रही है? एक व्यापक परिदृश्य में अगर यह विश्लेषण करें तो स्पष्ट होता है कि समाज का यह स्वाभाविक गुण न्यूनता की ओर है। बेशक इसे काल परिवर्तन तथा परिस्थिति की विवशता कहें लेकिन अब हालात काफी चिंतनीय व निराशाजनक हैं। धर्म नियमों, सामाजिक कायदों व परंपराओं को स्वच्छंदता व अमर्यादित खुलेपन की आड़ में कुचला जा रहा है। तकनीक व मोबाइल संस्कृति के कारण तो समाज ही नहीं पूरे विश्व का ताना-बाना गड़बड़ा रहा है। चूंकि हम यहां सिर्फ सहनशीलता जैसे एक विशिष्ट मानवीय गुण पर चर्चा कर रहे हैं तो इसी कारक को केंद्र में रखेंगे। नए सामाजिक परिवेश में हर व्यक्ति का आचरण, विचार, स्वभाव, मनोवृति, लहजा, भाषा पुन: परिभाषित हो रही है। पारिवारिक विघटन, पति-पत्नी के रिश्तों में खटास, रिश्तेदारी व मित्रों के बीच बढ़ते टकराव, व्यवसायिक स्थलों पर बढ़ता द्वंद्व तथा रिश्तों में आता उबाऊपन आदि कुरीतियां वर्तमान समय की पहचान बन चुकी हैं। आजकल नई पीढ़ी में तो विशेष रूप से सहनशीलता की कमी प्रत्यक्ष तौर पर देखी जा रही है। इसका प्रमुख कारण भौतिकवाद, एकाकी परिवार तथा पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव माना जा रहा है। माता-पिता विभिन्न समस्याओं में उलझे रहने के कारण बच्चों को अधिक समय नहीं दे पाते हैं। अनेक परिवारों में बुजुर्गों का सान्निध्य भी बच्चों को नहीं मिल पाता है। टीवी, मोबाइल, इंटरनेट में खोए रहने वाले बच्चों में सद्गुणों की बजाय दुर्गुण अधिक पनप रहे हैं। इसका प्रमाण इस तथ्य से मिलता है कि अगर कोई किसी कारणवश किसी का फोन नहीं उठा पाता है या संदेश का जवाब नहीं दे पाता है तो फोनकर्ता व्यक्ति झुंझलाहट से भर जाता है और मन ही मन उसे इस कृत्य के लिए कोसने लगता है। यही नहीं कई बार तो ऐसे वाकये संबंध-विच्छेद का कारण भी बन रहे हैं। किसी कार्यवश आए मानसिक तनाव को झेलने की बजाय युवा पीढ़ी आसानी से उपलब्ध नशों में सहारा ढूंढने लगी है। संचार जगत के विभिन्न माध्यम युवाओं को पाश्चात्य जगत के संपर्क व प्रभाव में लाकर अपनी संस्कृति से दूर ले जा रहे हैं। जिससे वे अत्यंत ही उग्र, चिड़चिड़े व हठी स्वभाव के आदी हो रहे हैं। वो अपने वरिष्ठों, शिक्षकों व अभिभावकों की बातों को अनसुना करने लगे हैं। उनमें धीरे-धीरे सहनशीलता लुप्त होने लगी हैं। ऐसे में माता-पिता, परिवार, समाज, शिक्षक व सामाजिक संस्थाएं आदि सभी का यह दायित्व बनता है कि एक सुसंस्कृत व सभ्य समाज के निर्माण के लिए वर्तमान तथा आने वाली पीढ़ी में सहनशीलता जैसे आवश्यक संस्कारों का समावेशन कराने की दिशा में गंभीरता से प्रयास करें।

साखी

ऊदोजी अड़ींग कृत साखी

मिनखा देही है अणमोली, भजन विना विरथा क्यूं खोवै।
भजन करो गुरु जम्भेश्वर का, आवागवण का दुखड़ा खोवै।
गर्भवास में कवल किया था, कवल पलट हरि विमुख होवै।
बाल पणे बालक संग रमियो, जवान भयो माया बस होवै।
चालीसां में तृष्णां जागी, मोह माया में पड़कर सोवै।
बेटा पोता अर पड़ पोता, हस्ती घोड़ा बघी होवै।
धन कर ऐस करे दुनिया में, मेरे बराबर कोई न होवै।
गर्व गुमान करै मत प्राणी, गर्व कियो हिरणाकुश रोवै।
गर्व किया लंकापति रावण, सीता हड़कर लंका खोवै।
सच्चा पायक रामचन्द्र का, हनुमान बलिकारी होवै।
तन में तीर्थ न्हाय त्रिवेणी, ज्ञान बिना मुक्ति नहीं होवै।
ज्ञान नहीं बन के मृग ने, किस्तुरी बन बन में टोवै।
अड़सठ तीरथ एक सुभ्यागत, मात पिता गुरु सेवा से होवै।
दोय कर जोड़ ऊदो जन बोलै, आवागवण कदै नहीं होवै।

भावार्थ- जीवन के प्रत्येक पक्ष को छूती हुई यह साखी नाना विषयों को उजागर करती हुई प्रवाह गति से गायी जाती है। मानव जीवन का लक्ष्य उच्च कोटि का होना चाहिये। लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिये। जिन्होंने जीवन में लापरवाही की है उनकी दुर्गति हुई है। अहंकार मानव का शत्रु है। निरहंकारी होकर ही जीवन को उन्नत बनाया जा सकता है। यही इस साखी में विशेष रूप से संकेत किया है।

साभार- साखी भावार्थ प्रकाश

सार जीवन का

हम मानव क्या जाने संतुष्टि की परिभाषा,
धन प्रसिद्धि मानव की हमेशा रहती अभिलाषा।
अधरों की मुस्कान तय होती है जेब के पैसों से,
खुशियां घर नहीं आती अब नए पुराने रिश्तों से।
उपकार है किसने चुकाया, कौन था कृतघ्न,
लोगों के गुण-अवगुणों का करते रहते हम आकलन।
मन के दोषों को नाम देते मजबूरियों का,
भगवान को स्वीकार्य था यही,
है यह नियती, टाल देते अक्सर सभी विपदाएं यूहीं।
सालों उपरान्त फिर कभी वैभव की कमी है खलती,
फिर मन में केवल ओर के लिए ईर्ष्या बुराई है पलती।
जो नष्ट कर देता विवेक, वह सदभावना,
विनाश कर देता निर्णय लेने की शक्ति।
जब अदृश्य हो जाती इस दुविधा की कोई भी युक्ति।
जाना है इस पर सबसे परे, तो जीवन ज्योति जलानी होगी,
मन की शक्ति से सभी दुविधाएं मिटानी होगी।
मानव प्रेम से सद्भाव वही है जीवन का मूल आधार,
और इसी के सहारे चलता है यह संपूर्ण संसार।
सार यही है जीवन का है मनुष्य तू जान ले,
मानव जीवन है मानवता के लिए, यह तू पहचान ले।
राह में मुश्किल होगी हजार।

-सुमन बिश्नोई
Ph.D. Scholar (CCS HAU Hisar)

जाम्भाष्टक (अर्थ सहित)

सदगुरु श्रीविष्णु जम्भेश्वर स्तुति में संत श्री गोबिंदराम बागड़िया रचित जाम्भाष्टक अर्थ सहित:

जाम्भाष्टक

मुखे चारू शोभं महामंद हास्यं,
करे जाप मालं गले जीर्ण चौलम।
महागैर रक्तं सिरस्थान जूटं,
परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्॥1॥

अर्थ: श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का मुख अति शोभायमान है, वे मंद-मंद मुस्करा रहे हैं। उनके हाथ जपमाला है, गले में (तन पे) पुराना व सादा वस्त्र पहने हुए हैं। श्री गुरुदेव के वस्त्रों का रंग भगवां एवं सिर पर लंबी जटाएं हैं, ऐसे परब्रह्म परमात्मा श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का हम नित्य भजन (स्मरण) करें।

स्थले चोपवेशं वरे धूर वेस्टं,
मुखे सबद शास्त्रं श्रुतेः पार जातम्।
जनैर्वेष्टमानं सदा साधु वृन्दे,
परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्॥2॥

अर्थ: श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान सम्भराथल धोरे की बालू रेत पर विराजमान हैं, उनके तन पर धोरे की रेत लगी हुई है, उनके श्रीमुख से सबद और शास्त्र उच्चरित हैं, वे सभी श्रुति सिद्धांतों के जानने वाले हैं। श्रद्धालु भक्तगण एवं संत शिरोमणी उनके चारों ओर बैठे हुए हैं, ऐसे परब्रह्म परमात्मा श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का हम नित्य भजन (स्मरण) करें।

अदृश्योदरं दृष्ट भूतं तथापि,
सदैवाभिमन्त्रं महायोग सिद्धः।
करे चारू पात्रं महावृक्ष फालं,
परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्॥3॥

अर्थ: यद्यपि श्री गुरुदेवजी का तन (पेट, पीठ) प्राणियों की दृष्टि से दिखाई नहीं देता तथापि करुणामय निज प्रिय भक्तों को दर्शन देते हैं, वे परमात्मा महासिद्धी देने वाले मंत्रों का उपदेश देते हैं। श्री गुरुदेव के हाथ में उत्तम वृक्ष के फल से बनाया हुआ सुन्दर पात्र (बर्तन) रखा हुआ है। ऐसे परब्रह्म परमात्मा श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का हम नित्य भजन (स्मरण) करें।

स्वयं शेष रूपं स्वयं ब्रह्म रूपं,
सदा निर्विकारं सदामात्र देहम्।
महाकांति शोभं जितं षड्गुणेसं,
परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्॥4॥

अर्थ: श्री गुरुदेव स्वयं ही शेष रूप हैं, स्वयं ही ब्रह्म रूप है, सदैव ही छः विकारों से रहित है, वे सदैव अन्न-जल आदि का आश्रय न लेकर केवल आत्म बल से ही शरीर धारण किये हुए हैं। फिर भी उनका मुख मंडल कांतिमय शोभायमान है, आशा, तृष्णा, चिंता, भूख, प्यास और नीन्द इत्यादि छवों। श्री गुरुदेव के वश में हैं यानि इन छवों को जीत कर गुरुदेव जति है, ऐसे परब्रह्म परमात्मा श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का हम नित्य भजन (स्मरण) करें।

गतं रोग शोकं गतं द्वेष रागं,
गतं पाप पुण्य गतं क्रोध कामम्।
गुणातीत विष्णु निराकार रूपं,
परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम्॥5॥

अर्थ: श्री गुरुदेव रोग, शोक से परे हैं, द्वेष और राग उनके हृदय में नहीं है, वे पाप-पुण्य से परे हैं, काम-क्रोध से दूर है यानि काम-क्रोध उन्हें स्पर्श नहीं करता। श्री गुरुदेव सत्त्व, रज, त्तमतीनों गुणों से रहित हैं, वे तो आत्मस्वरूप होने के कारण निराकार है, ऐसे परब्रह्म परमात्मा श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का हम नित्य भजन (स्मरण) करें।

दया ज्ञान सिन्धु ध्रुव लोकबन्धु,
शुचि शीलवन्तुं शुभालोकवंतुम।
कृतं पाप दूरं मनोवाक दूरं,

परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम् ॥6॥

अर्थः गुरु जम्भेश्वर भगवान दया और ज्ञान के सागर है, वे ध्रुव लोक तक सम्पूर्ण ब्रह्मांड के सच्चे बन्धु हैं, वे परम पावन शीलयुक्त आचरण करने वाले हैं यानि वे शील का पालन करने वाले हैं (शील एक शब्द मात्र नहीं है, गुरुदेव प्रदत्त नियम-4 में शील का पालन करना भी धर्म एवं गुण की तरह व्यापक अर्थ लिये हुए हैं, शील के बारे में भक्तराज प्रह्लाद की एक कथा आती है जो फिर किसी दिन विस्तार से प्रस्तुत करूंगा) वे सर्वलोक का हित चाहने वाले हैं, उनके स्मरण से कल्याण हो जाता है। वे मन और वाणी के पाप दूर करने वाले हैं यानि वे मन और वाणी के पाप से दूर है, ऐसे परब्रह्म परमात्मा श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का हम नित्य भजन (स्मरण) करें।

कृतानन्द भक्तं निवृताक्षे लब्धं,
विकाक्षेप्रभुंक्ति जनस्यातिहार्दम्।
मुख्यात बोधं गति देहिना च,
परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम् ॥7॥

अर्थः श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान निज भक्तों को आनन्द प्रदान करने वाले हैं, उनके दर्शन मात्र से सांसारिक प्राणियों की व्याधियां एवं दुष्चक्र इत्यादि की निवृत्ति हो जाती है, वे इन्द्रियों द्वारा सांसारिक पदार्थों का भोग न करते हुए भी सदा पूर्ण संतुष्ट रहते हैं। वे सभी प्राणियों पर हार्दिक स्नेह रखते हैं, उनके श्रीमुख से उत्तम उपदेश श्रवण करके प्राणी को उत्तम गति व मोक्ष मिल जाता है। ऐसे परब्रह्म परमात्मा श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का हम नित्य भजन (स्मरण) करें।

महायोग वैद्यंहतं पापपिनां च,
नृणामेक गम्यं जलानाभिवाब्धि।
महादैत्यनाशं सदाधर्म पालं,
परब्रह्म रूपं भजे जम्भमीशम् ॥8॥

अर्थः श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान योग अथवा तप साधना से जाने जा सकते हैं, वे पाप वृतियों का नाश करने हेतु अवतार धारण करने वाले हैं, जिस प्रकार संसार की सभी नदियाँ सुदूर समुद्र में जाकर आश्रय पाती हैं अर्थात् समुद्र में पहुँच कर शांत हो जाती है, ठीक उसी प्रकार ब्रह्मांड के सभी प्राणी विशेषकर मानव भी परमात्मा को प्राप्त कर परम शांति पाते हैं। श्री गुरुदेव हर युग में महादैत्यों (राक्षसों) का विनाश कर पुनः पुनः धर्म की स्थापना करते हैं, ऐसे परब्रह्म परमात्मा श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का हम नित्य भजन (स्मरण) करें।

श्री जाम्भाष्टकं मनसा, प्रातरुत्थाय मानवः
विजितेन्द्रियः पठेन्नित्यं, सर्व पापै प्रमुच्यते ॥

अर्थः परम संत गोबिन्दरामजी बागड़िया कहते हैं कि 'इस जाम्भाष्टक का नित्य पाठ कर धर्म को धारण करने से मानव (प्राणियों के सभी पाप नष्ट हो जायेंगे और आप सब प्राणी नित्य सुखी रहेंगे। वे ये भी कहते हैं कि संकट के समय जो कोई भी सच्चे मन से विष्णु अवतार श्री गुरु जाम्भोजी पर आस्था और विश्वास से इस महिमागान जाम्भाष्टक का पाठ करेगा, उसका हर संकट दूर हो जायेगा।

आप सभी पाठकों से अनुरोध है कि इस जाम्भाष्टक के अर्थ, इसके रचियता महात्मा गोबिन्द राम जी बागड़िया के बारे में किसी को और अधिक जानकारी मिले तो वे मुझे भी अवगत करवाने की कृपा करें।

ये सब संतों से सुनकर, ग्रन्थों से पढ़ कर संग्रह कर लेखन किया है।

संदर्भ ग्रन्थः

1. जाम्भोजी, बिश्नोई सम्प्रदाय और साहित्यः डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
2. स्वामी कृष्णानन्द आचार्य से सुनी कथा।
3. संत सुखदेव जी महाराज, श्री गुरु जम्भेश्वर मंदिर, चौधरीवाली से सुनी कथा।

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई
313, सेक्टर 14, हिसार (हरियाणा)
मो.: 9518139200, 9467694029

कृष्ण काव्य में जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक रचा गया कृष्ण काव्य श्रेष्ठ जीवन मूल्यों का खजाना है भगवान कृष्ण ने अपने अवतार का कारण गीता में स्पष्ट किया है –

परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

चराचर जगत के स्वामी को दुष्ट दलन के लिये पृथ्वी पर आना पड़ता है। लगता है यह तो मच्छर मारने के लिए तोप की व्यवस्था जैसी बात है।

जिस ब्रह्म को वेद 'नेति नेति' कहकर पुकारते हैं। वही अचिन्त्य, अद्‌भुत, अखिल ब्रह्माण्ड नायक अनन्त सौंदर्यशाली माधुर्यमयी, मंगलमूर्ति रूप में प्रकट होता है एवं भक्तजनों को अपना भजनीय रूप समर्पित करता है।

श्री कृष्ण कहते हैं "परित्राणाय साधूनाम्" गोपियों सदृश साधु जो एक पल भी प्रभु के बिना जिन्हें एक युग के सदृश लगता है, उनकी सन्तुष्टि के लिये ईश्वर को श्री विग्रह (शरीर) धारण करना पड़ता है। श्री कृष्ण कहते हैं कि हमारा लक्ष्य 'धर्म संस्थापन' है जो कि भक्तियोग का रूप है। सम्पूर्ण कृष्ण भक्ति काव्य में यही भजनीय रूप कवियों ने हृदयंगम किया है जो कि श्रेष्ठ जीवन मूल्यों का पोषक है। वही आनन्द स्वरूप भगवान कृष्ण जिनका केवल अनुभव किया जा सकता हैं। भक्त कवियों के गीतों का सार है। मध्यकालीन भक्त कवियों ने भागवत के दशम स्कन्ध की कथा का आश्रय लेकर काव्य सृजन किया है।

(1) भक्ति काव्य में श्री कृष्ण ही सच्चिदानन्द रूप में अवतरित हुए हैं–

अगम अगोचर लीलाधारी।
सोई राधा बस कुंज बिहारी।
बड़ भागी वे सब बृजबासी,
जिनके संग खेले अविनासी।
जोरस ब्रह्मादिक नहिं पावै।
सोरस गोकुल गलिन बहावै।
सुर सुजस कहि कहा बखाने,
गोविन्द की गीत गोविन्द जाने॥

भक्ति काव्य में रास लीला को सर्वोत्कृष्ट माना है। यहीं पर अखण्ड, अम्लान, लोकातीत आनन्द विधायिका है। श्री कृष्ण का जो माधुर्यमय रूप है वह लोक ग्राह्य है क्योंकि ब्रह्मज्ञानी भी प्रभु के साकार रूप के दर्शन करके धन्य हो जाते हैं और उन्हें अपना तत्व ज्ञान फीका लगने लगता है। महाराज जनक के शब्दों में –

इन्हहिं विलोकत अति अनुरागा,
बरबस ब्रह्म सुखहि मन त्यागा।
सहज बिराग रूप मनु मोरा,
थकित होत जिमिचंद चकोरा॥

यही भाव कृष्ण साहित्य में गोपियों के हृदय में विराजमान होता है। इसी गोपी भाव को भक्त कवियों ने धारण किया है। अष्टछाप के कवि हो या फिर मुस्लिम भक्त कवि सभी को कृष्ण दर्शन ही अभीष्ट है। सूरदास जी 'जहाँ अंखियाँ' हरि दरशन की प्यासी' कहकर अपना दु:ख प्रकट करते हैं तो वही अश्रु आज भारतेन्दु जी के नेत्र, गीतों से झर रहे हैं–

बरूनी में थिरें न झपैं उझपैं पल में न समाय बो जानती हैं।
द्विनहूँ जो वियोग पँरै हरिवन्द तो चाल प्रलय की सुख नती हैं॥

भक्त कवियों ने शृंगार को ब्रह्मानन्द सहोदर माना है। भक्ति काव्य में शृंगार भावना ब्रह्मोन्मुख होकर उज्ज्वल रस बन गई है और ब्रह्मानन्द प्राप्ति से भी ऊँची हो गई है। सूरदास जी के शब्दों में –

भजनानन्द अलि हम प्यारौ, ब्रह्मानन्द सुख कौन विचारौ॥

मानव जीवन के लिये आवश्यक पुरुषार्थ चतुष्टय की स्थापना कृष्ण भक्ति काव्य में भली–भांति हुई है। सम्पूर्ण कृष्ण काव्य में श्री कृष्ण ने कहीं भी अन्याय को आगे नहीं बढ़ने दिया। धर्मपूर्वक अर्थ के उपभोग की शिक्षा दी है।

माखन लीला, छाक लीला, रजक बध या फिर कंस वध ही हो, श्री कृष्ण ने कहीं भी किसी वस्तु का

अकेले उपयोग नहीं किया, वरन् सबको वितरित किया है। कंस वध के उपरान्त मथुरा का राज्य उग्रसेन को दे दिया है।

मानव मन को सर्वाधिक आकर्षित करने वाली काम भावना का कृष्ण काव्य में शोधन करके मानव जीवन के चरम पुरुषार्थ भगवद् प्राप्ति से जोड़ दिया है।

मध्यकालीन कृष्ण काव्य में स्थित लीलाओं में हमने पाया कि मनुष्य की दृष्टि जब तक ईश्वर पर रहती है तब तक वह आनन्द की प्राप्ति करता है। ज्यों ही उसकी दृष्टि श्री कृष्ण से हटती है वह संकट में पड़ जाता है। समस्त ग्वाल-बाल श्री कृष्ण के साथ आनन्द पूर्वक भोजन कर रहे थे, तभी बछड़े दूर चले गये। गोप कुमारों की दृष्टि श्री कृष्ण से हटकर बछड़ों पर चली गयी। फलत: उन्हें एक वर्ष का वियोग सहना पड़ा। इसी प्रकार से महारास में भी आनन्द की वर्षा हो रही थी। गोपियों की दृष्टि अपने सौन्दर्य, सौगन्ध एवं सौभाग्य पर थी। फलत: उनमें अहंकार का प्रादुर्भाव हुआ। अहंकार ही वह तत्व है जो कि मानव जीवन को दु:खी बनाता है। श्री कृष्ण तत्क्षण अंतर्ध्यान हो जाते हैं और गोपियों को भयंकर विरह वेदना सहनी पड़ती है। मैया यशोदा भी जब श्री कृष्ण को अतृप्त छोड़कर उफनते दूध को बचाने जाती हैं तभी अनर्थ हो जाता। दधि, दुग्ध भाण्ड तोड़े जाते हैं। और ऊखल बन्धन होने पर यमलाजुन उद्धार होता है। माता यशोदा बेचैन होकर श्री कृष्ण के कुशल मंगल की कामना करती हैं।

कृष्ण काव्य की कोई भी घटना हो मानवीय मूल्यों का अक्षय स्रोत है।

"पूतना" भगवान पूतना का नाश करते हैं। जो पूत नहीं है अर्थात् अपवित्र।

पूतना अविद्या है, अज्ञान है। अज्ञान का नाश करके ज्ञान का प्रकाश होता है। पर कृष्ण काव्य में भक्त कवियों ने इसे जाति से राक्षसी स्वभाव की घोर, बालघातिनी कंस की भेजी हुई कपटिनी है। इसके स्तनों में विष लगा है। श्री कृष्ण को तो वह माँ दिखती है माँ केवल माँ-

गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाई।
मातु की गति दई ताहि पालु जादव राई॥

मातृभक्ति का ऐसा अनूठा उदाहरण हिन्दी साहित्य क्या विश्व में अन्यत्र दुर्लभ है।

कृष्ण काव्य में वात्सल्य रसमें ही कवियों का मन अधिक लगा है क्योंकि पिता के प्रेम में वह शक्ति नहीं, भाई के प्रेम में वह शक्ति नहीं जो शरीर के रक्त को दूध में परिणत कर दे। यह तो वात्सल्य की ही असीम शक्ति है, अमूर्तभाव है कि वह दूध के रूप में साकार हो जाता है।

कृष्ण काव्य का केन्द्र बिन्दु बृज है जहाँ यमुना बह रही हैं गोवर्धन का शिखर है और है वृन्दावन की सुखद छाया। यह वन वास्तव में जड़ वन नहीं है अपितु चित् प्रधान वन है। उसमें जो पर्वत हैं, वृक्ष हैं, लता, गाय, हिरण अन्य पशु-पक्षी गोप-ग्वाल हैं, वह सब चिन्मय है। ध्येय वस्तु जड़ नहीं होती, वह हृदय में चेतन रूप से स्थित होती है।

श्रीकृष्ण का प्रकाट्य जेल खाने में होता है तो परतन्त्रता की बेड़ी कट जाती है। जब प्रेम की रस्सी लेकर माता यशोदा आती है तो बंध भी जाते हैं।

मध्य काल में सृजित काव्य में श्री कृष्ण अत्यन्त मानवीय रूप में अवतरित हुए। गोपी ग्वाल कभी उन्हें ऐश्वर्य दृष्टि से नहीं देखते हैं। ऐसे हैं हमारे लौकिक कृष्ण और उनका मानवीय चरित्र।

वह स्वर्ग के देवता की अपेक्षा मृत्य लोक के वन को, पर्वत को उनके वासियों को अधिक महत्व देते हैं। वे इन्द्र से अधिक आदर गायों का करते हैं, गोपों का करते है। गायों को चारा प्रदान करने वालों को देते हैं। गोवर्धन धारण लीला का रहस्य मानवीय मूल्यों का सृजन है।

श्रीकृष्ण को अध्यात्म ज्ञान के साथ-साथ लौकिक ज्ञान भी है। वे नृत्य, गीत, वाद्य, अभिनय आदि सभी कलाओं में निपुण हैं। आयुर्वेद, धनुर्वेद, स्थापत्यवेद में पारंगत हैं। कृष्ण का व्यक्तित्व एकांगी नहीं, वरन सार्वभौमिक हैं।

वेणु गीत संसार को एक प्रेम रस में डुबोने वाला नाद है। मधुरता की प्रतीक रूपा बंशी श्री कृष्ण बजाते हैं तो चराचर जगत अखण्ड आनन्द की प्राप्ति करता है। महारास के समय बाँसुरी की ध्वनि केवल मिलनातुर गोपियों को ही सुनाई देती है। इससे प्रकट होता है कि संसार में विद्यमान् किसी भी तत्व को व्यक्ति अपनी पात्रता के अनुसार ही प्राप्त करता है।

कृष्ण ही भक्ति काव्य में सत्-चित् आनन्द स्वरूप है। सद्भाव का प्रकाश निर्विकार-अनुभूति एवं

उपदेशों में तथा आनन्द भाव का परिपूर्ण विकास उनकी रासलीला में हुआ है। कृष्ण भक्ति साहित्य में मधु, आनन्द रस एवं सुख के रूप में श्री कृष्ण का वर्णन हुआ है। कृष्ण लीला में अनेक चेतन पात्र हैं, वहीं कुछ पात्र जड़ होकर भी चेतन का चित्त हरण करते हैं–

मुरली तौ यह बांस की।
बाजति स्वास परति रहिं जानति,
अई रहति पिय पास की चेतना को वित
हरति, अचेतन, भूखी डोलत माँस की।
सूरदास सब ब्रज वासिनी सौं,
लिये रहति है गाँस की॥

कृष्ण काव्य में श्री कृष्ण को अत्यन्त सुख प्रदाता के रूप में चित्रित किया है। श्री कृष्ण के रूप दर्शन के अतिरिक्त मानव जीवन में कहीं सुख है ही नहीं, गोविन्द स्वामी के शब्दों में –

स्याम सुन्दर कमल लोचन देखत अति सुख पाऊं।

कृष्ण ही इस असार संसार में सार रूप हैं एवं परम कल्याणकारी तथा सुन्दर हैं। जीवन का आनन्द तो समाज के समवेत रूप में ही है क्योंकि कहा गया है "संघे शक्तिः" रास लीला के समय अनन्त सौन्दर्य के दर्शन होते हैं–

जौ ब्रज देवी नृत्यत, मंडल रास महाछवि,
सो रस कैसे वरन् सकै, यहाँ ऐसौ को कवि।
शोभित कुंजन की छवि भारी,
अद्भूत रूप तमाल सो लपटी, कनक बेलि सुकुमारी॥

कृष्ण काव्य अपने आप में जीवन मूल्यों का सार है जिसे प्रकट करना सूर्य को पकड़ने के समान है। कृष्ण काव्य में वह शक्ति है कि वह समस्त दैहिक, दैविक, भौतिक तापों का शमन कर आल्हाद को प्रदान करता है। नन्ददास के गीतों में –

सुनत स्याम को नाम, ग्राम गृह की सुधि भूलहि।
भरि आनंद हृदय प्रेम बेलिदुम फूलहि॥

कृष्ण भक्ति ही परम कल्याणदायक और आनन्द स्वरूप है। इस प्रकार से कृष्ण भक्ति साहित्य में सर्वत्र सत्यं, शिवं, सुन्दरं की स्थापना हुई है।

भक्तिकाल में भारतीय जन समाज मुगल सम्राटों की कट्टर धार्मिकता के कारण अत्यन्त पीड़ित था। ऐसी स्थिति में मुसलमान भक्त कवियों ने काव्य का सृजन कर श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की स्थापना की है। इस शृंखला में नजीर अकबराबादी, रहीम, रसखान, कारेबेग, ताज बीबी आदि उल्लेखनीय हैं। इन कवियों ने मानव मन के विष वादी स्वरों में सामंजस्य लाने का प्रयत्न किया है। इनका सृजन इसी अभेद दृष्टि से होता है। अपनी भक्ति भावना का जो कल्प वृक्ष इन्होंने आरोपित किया, उसकी जड़ें भारत भूमि में गहरी जमी हैं, यहां के जीवन से इनका गाढ़ा परिचय है, परम्परा की सुगन्ध उस पारिजात के काव्य–कुसुमों में बसी हुई है। इनके गीतों में भारतीय संस्कृति अपने सहज और जीवन्त रूप में परिलक्षित होती है। आक्रमणकारी सिकन्दर ने लौटते समय कहा था, 'मैं तलवार खींचे भारत आया था, हृदय देकर जा रहा हूँ। भारतीय संस्कृति की चेतना को हिन्दी के मुसलमान भक्त कवियों ने आत्मसात किया है। अतः भारतीय जीवन मूल्य उनकी रचनाओं में अप्रतिम आभा के साथ देदीप्यमान हुए हैं। इन्होंने 'मानव मात्र की एकता और प्रेम का प्रचार' अपने काव्य द्वारा किया है। भक्ति काल से लेकर आधुनिक काल तक मुस्लिम भक्त कवियों ने श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की स्थापना की थी। भक्ति काल में जो बात भक्त कवियों ने भक्ति रचनाओं के माध्यम से कही थी, उसे इकबाल ने आधुनिक काल में अपने शब्दों से स्पष्ट कर मानव जाति को कुछ सोचने के लिये विवश कर दिया है –

'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।'

मीरा ने विद्रोह और प्रेम को नैसर्गिक वाणी प्रदान की है जो चिरकाल तक अमर रहेगी। उनके पद समाज का वह दर्पण हैं जिसमें मानव अपने आहत अहं को, अपने संघर्षों को, अपनी आस्थाओं को, अपने प्रेमी हृदय की भावनाओं को प्रतिबिम्बित होते हुए देखता है। अपने काव्य की इसी विशिष्टता के कारण मीरा सर्वप्रिय हैं, सर्वस्तुत्य हैं। अवसाद को हंस कर झेलने की कला कोई सीखना चाहे तो मीरा सद्श कोई और नहीं प्राप्त हो सकता। मीरा कहती हैं कि अन्याय मिटा नहीं सकते तो कम से कम असहमति तो प्रकट कर ही सकते हैं।

जीवन मूल्यों की यह भक्ति स्वरूपा गंगा पूर्व मध्यकाल की भांति उत्तर मध्यकाल में भी नित्य नयी छटा बिखेरती रही है।

बिहारी ने राधा कृष्ण के अनुपम शृंगार और प्रेम का सुन्दर चित्रण किया है। देव ने भाव चेतना और रसाद्रता को नया आयाम दिया है। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् को एक साथ अवलोकित किया है–

पार बार पूरन अपार पर ब्रह्म रासि।
यशुदा के कौरे एक ही बार कुरैपरी॥

देव ने स्वकीया प्रेम पर अधिक जोर दिया है। क्योंकि स्वकीया प्रेम ही समाज को सुगठित और सुसंस्कृत बनाता है–

तब ही लौ शृंगार रस, जब लगि दम्पत्ति प्रेम।

इस प्रकार घनानन्द, पदमाकर, रत्नाकर आदि ने कृष्ण काव्य के माध्यम से श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की स्थापना की है। गुमान कृत कृष्णायन् बृजबासी दास रचित बृजविलास उच्च जीवन मूल्यों को अन्त: में समेटे हुए हैं।

आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध भी स्तुत्य हैं। उपाध्याय जी कृत प्रिय प्रवास में राधा कृष्ण जीवन के पावन आदर्शों को पाकर प्रेमिका से लोक सेविका बन जाती है। उनका कृष्ण प्रेम विश्व प्रेम में परिणत हो जाता है। इस प्रकार 'अष्ट छप के राधामाधव ने हरिऔध के प्रिय प्रवास में अपनी आत्मा के साथ नवीन कलेवर धारण कर जीवन मूल्यों का जीर्णोद्धार किया है।'

जैसे स्थाली–पुलाक–न्याय से मात्र एक चावल को पका देखकर समस्त ओदन पका मान लिया जाता है वैसे ही भक्ति कालीन कोई भी कृष्ण भक्त कवि हो, उसके द्वारा वर्णित कोई भी लीला अनन्त आनन्द की सृष्टि करती है कि मानव जीवन के समस्त ताप मिट जाते हैं।

भक्त कवियों ने श्री कृष्ण का जो चरित्र गान किया है वह अपने आप में पूर्ण है। श्री कृष्ण का व्यक्तित्व भारतीय वाङ्मय का सार है उसके माध्यम से नैतिक जीवन मूल्यों का प्रतिपादन हुआ है। प्राणिमात्र में स्थित जिजीविषा का संरक्षण सबसे महत्वपूर्ण मूल्य है। जीवन रक्षा के लिये किया गया कोई भी समझौता क्षम्य होता है। मानव की सुरक्षा में ही मानवता निहित है। श्री कृष्ण ने समस्त जीवन मूल्यों की रक्षा एवं संवृद्धि हेतु स्वरक्षा परक मूल्यों को अधिक महत्व दिया है।

श्री कृष्ण ने जीवन को सुखकर बनाने के लिए मानवीय मूल्यों को अपने ढंग से स्वीकारा है। कहा गया है 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' किसी भी मूल्य को हम स्वीकार करते समय अति से बचें तभी उसका यथार्थ लाभ होता है। महात्मा बुद्ध जब भी जीवन में 'मज्झम प्रतिपदा' अर्थात् मध्यम मार्ग अपनाने को कहा है।

रास लीला के माध्यम से श्री कृष्ण ने सह–जीवन सह–अस्तित्व की प्रतिस्थापना की है। श्री कृष्ण का यह संदेश समस्त मानवता ही क्या प्राणि मात्र के विकास में सहायक है। उन्होंने जीवन के प्रत्येक आयाम को देखा, समझा और परखा, जिससे वे युग–युग के प्रतिनिधि बने। उनका जीवन चिन्तन मानव समाज को स्वस्थ, सुखी, सुन्दर और शुभ बनाता है।

अपने लिये नहीं उन्होंने धर्म संस्थापना के लिये छल किया है इसलिये वह छल न होकर धर्म हो गया है। जैसे जहर–जहर को मारता है 'सठे शाठ्यं समाचरेत्' का प्रतिपादन किया है। श्री कृष्ण धर्म की रक्षा के लिये वैयक्तिक धर्म का त्याग करने में क्षण भर का भी विलम्ब नहीं करते हैं।

इस प्रकार से सम्पूर्ण हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य के अध्ययन करने पर पता चलता है कि उस काल में रचा गया साहित्य श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों की स्थापना करता है। मानवीय मूल्य शाश्वत होते हैं और आज के युग में जबकि मूल्यों का संक्रमण हो रहा है उतने ही प्रासंगिक और हितकर हैं जितने कि उस काल में थे।

मानवीय मूल्यों की व्याख्या करते समय श्री कृष्ण का ही सर्वप्रथम नाम आयेगा, क्योंकि उनके माध्यम से किसी भी कोटि का व्यक्ति हो अपने जीवन को शुभ और आनन्दमय बना सकता है। भक्ति कालीन हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य का समग्र विवेचन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इस युग में रचा गया साहित्य मानवीय मूल्यों का अक्षय स्त्रोत है।

विश्व का समस्त साहित्य युग–युग को संचित

सम्पत्ति का भण्डार है। उसका निर्माण मानव जीवन के आधार पर होता है और वह दुर्बल पतित एवं आपत्ति ग्रस्त मानवता के सशक्त, उन्नत एवं आनन्दमय बनाने हेतु होता है। कृष्ण भक्ति काव्य में मानव मात्र के लिए जीवन सन्देश अंतरर्निहित है और उस सन्देश द्वारा वह मानव जीवन को कल्याणमय बनाने का प्रयत्न करता है। जिस प्रकार से माता अपने शिशु के कल्याण हेतु सतत् प्रयत्नशील रहती है वैसे ही कृष्ण भक्ति काव्य ने निरन्तर समस्याओं से ग्रस्त, एकता से रहित विषाद में फंसी हुई अभिनव मानव सृष्टि को दु:खों से उबार कर सुखमय स्वस्थ दृष्टिकोण प्रदान किया है।

संसार में दु:ख सुख तो दिन रात की भांति अवश्यंभावी है। अत: विषाद रहित होकर सुखों की ओर बढ़ने का प्रयत्न भक्ति काव्य में हुआ है। कृष्ण भक्ति काव्य निराश, भय-अस्त, भ्रमित एवं दु:ख दग्ध मानव को शान्ति, सुख, आशा एवं अखण्ड आनन्द को प्राप्ति का मंगलमय संदेश प्रदान करता है। भक्ति काव्य की जीवंतता का स्रोत ब्रजमण्डल के ढेरों संस्कार हैं जिन्हें भक्त कवियों ने अतिसूक्ष्मता से निहारा है तथा उसे समूचे वैविध्य और व्यापकता के साथ आत्मसात् किया है।

भक्त कवियों ने श्री कृष्ण के चरित्र को निरन्तर लोक जीवन की खुली भूमि पर रखा है क्योंकि वे भली-भांति जानते थे कि उनके आराध्य का समाजीकरण ज हुआ तो उसके मानवीय तंतु कमजोर पड़ जायेंगे। कृष्ण भक्ति काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि विभिन्न कथाओं और लीलाओं के बीच श्री कृष्ण सामाजिक ही रहे हैं, जन्म से लेकर द्वारिका गमन तक। भारतीय दर्शन ने जिस ब्रह्म को अनन्त सत्ता मानकर साधारण जनों से पृथक् कर दिया था, भक्ति काल में वह मानवेतर नहीं वरन् ग्राम्य बालकों के साथ नृत्यमग्न नटखट बालक है। कृष्ण काव्य में सर्वत्र प्रेम तत्व ही ओत-प्रोत है। यही व्यापक प्रेम शरारती कृष्ण को शक्तिधर चक्रवर्ती, योगिराज कृष्ण के रूप में परिणत करता है।

कृष्ण भक्ति काव्य में भ्रमर गीत परम्परा की अपनी ही भूमिका है। इसके-माध्यम से ज्ञान पर भक्ति की विजय है। कवियों की अन्त: दृष्टि ने कृष्ण के विभिन्न रूपों, अवस्थाओं और भंगिमाओं को देखा और उन से तादात्म्य स्थापित कर हृदय की गहराई से उसे गाया। इसी कारण से वह इतना संवेदनशील, सहज तथा माधुर्यमय हुआ तथा निरन्तर उत्कर्ष को प्राप्त करता हुआ अमर काव्य हो गया। भक्ति साहित्य की लोकप्रियता का कारण यह था कि उस समय समाज के समक्ष मजहबी उन्माद की विकराल समस्या थी तथा घर-घर अनेक जोगी, जोगड़ों नाथ पंथी विरागी साधुओं का भारी जम घट था, इस कारण सदियों से चली आ रही भारतीय वर्णाश्रम व्यवस्था टूटने लगी थी। ऐसे समय में भक्तिधारा का उदय डूबते को तिनके के सहारे के समान सिद्ध हुई। दीन मन: समाज को भक्ति काव्य ने पूरी तीव्रता से आन्दोलित और आप्लावित कर दिया।

इस प्रकार भक्ति कालीन हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य में मानवीय मूल्यों की मंगलमयी यात्रालोक जीवन के पथ पर ही अग्रसर हुई है।

श्री कृष्ण ने व्यक्ति से अधिक महत्व समाज को दिया है। इस काल में नारी मन की सूक्ष्म भावनाओं का प्रचुर चित्रण है। समाज का विकास नारी विकास से ही सम्भव है। एक आदर्श माता ही एक आदर्श नागरिक का निर्माण कर सकती है। प्रकृति के प्रति भी इस युग में विशेष जागरूकता है। प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण ही सभ्य समाज की पहचान है। प्रकृति का समुचित उपयोग ही स्वस्थ पर्यावरण का निर्माता है।

सभ्यता के विकास का मूल मनुष्य की सौन्दर्य प्रियता है। वह सुन्दर को सुन्दतम बनाना चाहता है। इसलिए वह जीने की कला को नये नये ढंगों से सजाता है, संवारता है। इनमें 'साहित्य, संगीत, कला विहीन मनुष्य की कल्पना व्यर्थ प्रतीत होती है, कृष्ण काव्य में ये तीनों वस्तुएं एक साथ प्रस्तुत हुई हैं। मानव जीवन को आनन्दमय बनाने वाले समस्त मूल्य, भक्ति कालीन हिन्दी कृष्ण भक्ति कारव्य में अत्यन्त सहज, सरल एवं आकर्षक रूप में प्रस्तुत हुए हैं।

-डॉ. राजा राम
गांव व डाकखाना शेखूपुर दड़ौली,
जिला फतेहाबाद (हरियाणा)
मो. 9896789100

पर्यावरण संरक्षण में अगुवा रहा है- बिश्नोई समाज

बिश्नोई आंदोलन पर्यावरण संरक्षण, वन्यजीव संरक्षण और हरित जीवन के पहले संगठित समर्थकों में से एक है। बिश्नोइयों को भारत का पहला पर्यावरणविद् माना जाता है। ये जन्मजात प्रकृति प्रेमी होते हैं। पर्यावरण आंदोलनों के इतिहास में, यह वह आंदोलन था जिसने पहली बार पेड़ों को अपनी सुरक्षा के लिए गले लगाने और गले लगाने की रणनीति का इस्तेमाल किया। बिश्नोई समाज के लिए हिरण का मतलब भगवान है। बिश्नोई समाज के लिए हिरण भगवान श्रीकृष्ण के अवतार की तरह हैं वो उनको पूजते हैं। साथ ही बिश्नोई समाज की महिलाएं हिरण के बच्चों को अपने बच्चों की तरह स्तनपान करवाती हैं। इसी तरह बिश्नोई समाज पेड़ों के लिए प्रतिबद्ध रहता है। वो कहते हैं हम पेड़ और जीव-जन्तुओं के लिए जान तक दे सकते हैं।

मां हमेशा अपने बच्चों का ख्याल रखती है और उनकी हर जरूरतों को पूरा करने में अपनी जान लगा देती है। आज हम आपको ऐसी माओं के बारे में बताने जा रहे हैं जो हिरण को बिल्कुल अपने बच्चे की तरह पालती हैं और बचपन से लेकर बड़े होने तक उनकी हर छोटी-बड़ी बात का ध्यान रखती है। सुनने में ये आपको अजीब-सा लगेगा पर ये बिल्कुल सच है। राजस्थान के बिश्नोई समाज की महिलाएं हिरण के बच्चों को बिल्कुल मां की तरह पालती है, यहां तक की उन्हें अपना दूध भी पिलाती है। उल्लेखनीय है कि राजस्थान में करीब 500 साल से प्रथा चली आ रही है जहां महिलाएं बिल्कुल बच्चों की तरह जानवरों को पालती हैं।

बिश्नोई समाज की महिलाएं जानवरों को अपने बच्चों की तरह पालती हैं, उनकी देखभाल करती हैं यहां तक की अपना दूध भी पिलाती हैं। न सिर्फ महिलाएं बल्कि, इस समाज के पुरुष भी लावारिस और अनाथ हो चुके हिरण के बच्चों को अपने घरों में परिवार के सदस्यों की तरह पालते हैं। इस समाज की महिलाएं खुद को हिरण के इन बच्चों की मां कहती हैं। बिश्नोई समाज को अपना नाम भगवान विष्णु के नाम से मिला है। बिश्नोई समाज के लोग पर्यावरण को पूजते हैं। बिश्नोई समाज के लोग ज्यादातर जंगल और थार रेगिस्तान के समीप रहते हैं। इस समाज के बच्चे जानवरों के साथ खेल-कूद कर बड़े होते हैं। बिश्नोई समाज के लोग श्री जम्भेश्वर भगवान को मानते हैं जो कि बिश्नोई समाज के अराध्य देव थे। इस समाज के लोग अपने बनाए नियमों का सख्ती से पालन करते हैं। बिश्नोई अथवा विश्नोई उत्तर पश्चिमी भारत के पश्चिमी राजस्थान का एक पर्यावरण प्रेमी पंथ (संप्रदाय) है। इस पंथ के संस्थापक जाम्भोजी महाराज है। जाम्भोजी महाराज द्वारा बताये 29 नियमों का पालन करने वाला बिश्नोई है। कई मान्यताओं के अनुसार श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान विष्णु के अवतार माने गए हैं। इनसे बना 'विष्णोई' शब्द कालांतर में परिवर्तित होकर विश्नोई या बिश्नोई हो गया। बिश्नोई विशुद्ध शाकाहारी होते हैं। बिश्नोई एक जाति हैं जो विशुद्ध शाकाहारी हैं वन एवं वन्यजीवों पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली हैं। बिश्नोई समाज के लोग ज्यादातर किसान होते हैं जो खेती व पशुपालन करते हैं। वे बड़े मेहनती, निडर, साहसी व बहादुर होते हैं।

प्रसिद्ध अमृता देवी बिश्नोई का आंदोलन पर्यावरण संरक्षण के अग्रणी प्रयासों में से एक माना जाता है। खेजड़ी के हरे वृक्षों की रक्षा करने के लिए अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में 363 बिश्नोइयों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे। जोधपुर के राजा अभय सिंह ने 1730 के दशक में अपना नया महल बनवाते समय अपने सैनिकों को खेजड़ली गांव में लकड़ी के लिए पेड़ों को काटने का आदेश दिया। विरोध के प्रतीक के रूप में अमृता देवी सैनिकों के खिलाफ खड़ी हो गई और पेड़ों से लिपटकर उनके जीवन के लिए संघर्ष किया। उनकी तीन बेटियाँ, आसु, रत्नी और भागू भी अपनी माँ के साथ खड़ी थीं। उनका समर्थन करते हुए, इस समुदाय के अन्य लोग भी पेड़ों के लिए खड़े हो गए और अपनी बाहों को ट्रंक के चारों ओर लपेट

लिया। सैनिकों ने लोगों के अनुरोधों पर ध्यान दिए बिना पेड़ों को काटना जारी रखा। पेड़ों की कटाई का विरोध करने का मुख्य कारण बिश्नोई समुदाय की सांस्कृतिक मान्यता में निहित था जैसा कि संप्रदाय के सिद्धांतों में वर्णित है, पेड़ों की सुरक्षा और वन्यजीव संरक्षण।

एक अन्य कारण तुरंत उनकी ग्रामीण आजीविका से संबंधित था, क्योंकि वे ईंधन की लकड़ी और चारे की आपूर्ति के लिए जंगल पर निर्भर थे। खेजड़ली और अन्य गांवों के बिश्नोई इस आंदोलन में शामिल होने आए और खेजड़ी के पेड़ों को अपने सिर की कीमत पर काटे जाने से बचाने के लिए खेजड़ी के पेड़ों को गले लगाया। इस आंदोलन में 363 बिश्नोइयों ने राजस्थान के खेजड़ली गांव में खेजड़ी के पेड़ों की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। इस आंदोलन ने स्मृतियों पर एक अमिट छाप छोड़ी है और लोगों के मानस पर दीर्घकालिक प्रभाव डाला है। इस घटना के बाद, महाराजा ने सभी बिश्नोई गांवों में पेड़ों की कटाई को रोकने के लिए एक मजबूत शाही फरमान दिया। ट्री-हगिंग और ट्री हगर्स की अवधारणा की जड़ें बिश्नोवाद के इतिहास में 1730 ईस्वी सन् में हैं।

इस आंदोलन और बलिदान ने न केवल 20वीं शताब्दी में चिपको आंदोलन को प्रेरित किया, जिसका नेतृत्व सुंदर लाल बहुगुणा ने किया था, बल्कि भारत सरकार को 'अमृता देवी बिश्नोई वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार' और राजस्थान सरकार को भी इस क्षेत्र में पुरस्कार देने के लिए प्रेरित किया। बिश्नोई समाज की पर्यावरण संरक्षण और वन एवं वन्य जीव संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका है। इनके द्वारा प्रकृति और वन्य जीवों को बचाने के लिए संघर्ष के कई उदाहरण मिलते हैं और इन्होने अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई महासभा की स्थापना की है। वन वन्य जीवों के संरक्षण के लिए बिश्नोई टाईगर फोर्स संस्था बनाई गई हैं जो चौबिसों घंटे वन्यजीवों की शिकार कि घटनाओं के विरुद्ध कार्यवाही करती हैं। शिकारियों को घटनास्थल से पकड़ने, वन्य विभाग, पुलिस के सुपुर्द करने के अलावा कोर्ट में शिकारियों के विरुद्ध पैरवी करती हैं।

-मदन बिश्नोई
सहायक प्राध्यापक, भूगोल
राजकीय महाविद्यालय, भट्टू कलां
मो.: 9467740884

गाडरियो हुवैलो जीवड़ा चौपरियैलो

गाडरियो हुवैलो जीवड़ा चौपरियैलो, झाटकणां की तेरै झूड़ पड़ै॥
ओडां कै घरि पोहणियो हुवैलो, ले ले बोरी वड़ा पाळ चड़ै॥
सुवरियो रे हुवैलो जीवड़ा सहरि फिरैलो, ठरड़क्य ठरड़क्य नास करै॥
पापां कै पसाए जीवड़ा दो रै जैंलो, उत कंणि अफरी मार पड़ै॥
लख चोवरासी जूंणि पड़ैलो, जळंम जळंम का दुख पड़ै॥
जब लग जीवड़ा तैं सुकरति न कीयौ, ज्यों तूं नान्हीं जूंणि पड़ै॥
ऊदोजी भणै जपो निज नामी, देव नहीं कोई झंभ घड़ै॥

-ऊदोजी नैण

जाम्भोजी का भ्रमण करना

काबुल में जीव हत्या बंद करवाना

एक सम जाम्भोजी मक मदीन लवेयान की पाल्य उपरे खड़ा रह्या। एक झींवर जाल ले आयो। जाम्भोजी झींवर ने कह्यो – जल में जाल मत रेड़। झींवर जल मां जाल रेड़यो। एक पछी आई। जांभजी नफर न कहे। दवा सुणाई। मछी अमर हुई, झींवर कनी यों मछी काजी लिवी। काजी करद चलाव। मछी कट नहीं। तीन्य दिन आतस मां उकलाई। पछी क आंच लागी नहीं। काजी झींवर पकड़ि मंगायो। क्यों व कुटण यो मछी कहां ते लायौ। काजी हकीकत कही, काजी मछी ले पीर क पास्य आया। काजी कह तुम कुण मरद हो। जांभोजी कह यौह माही कहगी मछी कह – विसमलाह हरे रहमान रहीम ...

हे वील्ह! श्री जम्भेश्वर जी ने केवल सम्भराथल पर ही शब्दोपदेश दिया हो, ऐसी बात नहीं है। यत्र-तत्र भ्रमण करके भूले-भटके जीवों को सुपात्र जान कर सचेत किया। एक समय श्री देवजी मक्का-मदीना गये थे। वहां पर लवेयान तालाब की पाल पर खड़े थे। उसी समय ही एक झींवर मच्छी पकड़ने वाला आया और जल में जाल डालने लगा। जाम्भोजी ने झींवर से कहा- तू जल में जाल मत डाल, किन्तु झींवर ने देवजी की बात सुनकर भी अनसुनी कर दी और जल में जाल डाल दिया।

जाल में एक मच्छी फंस गई, जांभोजी ने उस मच्छी को अमर होने का वरदान प्रदान किया जिससे वह अमर हो गई। उस झींवर को क्या पता वह तो रोज की भांति उस मच्छी को जल से निकाल कर ले गया। बाजार में जाकर उस मच्छी को काजी के हाथ बेच दी। काजी ने उसे काटने के लिए करद चलाया, किन्तु वह तो बज्र देह वाली हो गई थी, कटने में आई नहीं। तब काजी ने उसे तीन दिन तक अग्नि में पकाई, किन्तु वह ज्यों के त्यों बनी रही आंच लगी भी नहीं थी। काजी ने उस झींवर को पकड़ के बुलाया और पूछा –

रे कुटण! यह मच्छी तू कहां से लाया? काजी के सामने जो हकीकत थी, वह उस झींवर ने बतलाई। काजी उस मच्छली को लेकर श्री देवजी के पास में आया। काजी कहने लगा- तुम कौन मरद हो? जाम्भोजी ने कहा- मैं कौन हूँ, यह मैं नहीं कहूंगा, मेरा परिचय तो यह मच्छी ही दे रही है। अधिक क्या बतलाउं। इस घटना से अब तक मेरा परिचय तुम्हें नहीं मिला तो अब अधिक कहने से भी कोई फायदा नहीं है। ऐसा कहते हुए शब्द बनाया।

यह शब्द अरबी-फारसी भाषा में है जो उस काजी को सुनाया था। यह शब्द काजी ने किताब में लिख लिया था। जाम्भोजी का स्वागत किया और सदा -सा के लिए मच्छली न मारने का प्रण किया।

नाथोजी कहते हैं हे वील्ह! यह पारसी का शब्द होने से हमारे लोगों के समझ में नहीं आया। इसीलिए कण्ठस्थ भी नहीं हो सका था। काजी की किताब में लिखा हुआ था उसी रूप में तुम पढ़ सकते हो। शब्द इस प्रकार से है –

बिसमलाह हरे रहमाने रहीम, रोजे ही बाय। सेख जहान मा वामक मदीनै वा जिवाय जिकर करद अद। नसबुद याय रबी। दसत पोसीदा वव पे सेख। अवरदह। या पीर दसतगीर। अजमादर। उपदर पदास्य नेस। दह सूरा कदरब ओजू दमर धाम। नैमें वासद न मे करद अद। सेख पुरजीद की कुदरती। एमन माही सोगंद खुदाय तालाह हक बागोयौ। माही दरसे खान वागुकद: अबलि गुसल करद अद: वाजे अजली वाज:। इदबा सुखानंद मनवा जहां जरि: दवा दप गोस तासीर आतस पुरसद मैने वासद: एक राज पीरान मुरीदान: खुद बुखानंद खवा अबरत वा मुरद वाउ आकोन अजावर कबे: सुद हाम दोजकी मन वासद परहेज बुद विसमलाह हिर हिमाने रहीम खरे खुलायक उआ अफजल अलाह सरि। अवल्य नासरे सइदान महमंद अलाह सलम। बाजे कुल सलाम: अलाह सालहीज अलाह मौमदीन: उसलेह अलाह अबीयपां।

काजी किताब मां लिख्य लीवी।

पीर की कदम पोसी कीवी। जीव तणां छोड्या।

उस समय का यह शब्द सुनाया हुआ नाथोजी ने वील्होजी को सुनाया। मृत मछली को जाम्भोजी के कहने से काजी ने वापिस जल में डाल दी। मच्छली जल में तैरने लगी। जिसकी सांई स्वयं रक्षा करे उसे मारने वाला कौन हो सकता है?

श्री देवजी ने कहा– न तो मैं हिन्दू हूँ और नहीं मुसलमान। आप लोग क्या चाहते हैं? काबली कहने लगे – यदि आपको भोजन करने की इच्छा हो तो आपके लिये भोजन ले आये। श्री देवजी ने कहा– मेरी चिंता न करो, आप लोग सुखनखां के पास जाओ और उनसे कहना कि हक की कमाई करो, हक का ही खाओ।

वे पांचो सुखनखां के पास गए और पीरजी की बात कह सुनाई– सुखनखां उन पांचों के साथ भोजन लेकर श्री देवजी के पास आया और कपड़े से ढकी हुई थाल आगे रखते हुए इस प्रकार से कहने लगा– हे पीरजी! यह आपके लिए भोजन लाये हैं, इससे पेट भरो, ऐसा कहते हुए सुखनखां परिक्रमा करते हुए श्री देवजी के सामने बैठ गया।

श्री जाम्भोजी ने कहा– मुझे भोजन की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मुझे भूख प्यास लगती नहीं है। भूख प्यास तो उसे सताती है जिनका शरीर पांच तत्त्वों से बना हुआ है। यह भोजन तुम वापिस अपने ही घर ले जाओ और एकान्त में बैठ कर खा लेना। सुखन खां कुछ कहने लगा– तभी उसकी थाली में तीतर का मांस था। वही भोजन लेकर आया था। वे तीतर तो थाली में से जीवित होकर उड़ गये।

इस प्रकार से पीर में शक्ति देखी और सुखन खां चरणों में गिर पड़ा और प्रार्थना करने लगा – हे पीरजी! मुझे क्षमा कर दो, मैं अब तक अज्ञान अंधकार में सोया हुआ था। अब मेरी आँखे खुल गई। मेरे गुन्हे बख्स दो। अपने जन को संसार सागर से पार उतार दो।

श्री देवजी ने उन्नतीस नियम बतलाये हुए कहा – फिर कभी जीव हत्या नहीं करना। नियमों का पालन करना। तूं प्रहलाद पंथी जीव है। यह मैं जानता हूँ इसीलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ, तुम्हें जगाया है, फिर सो मत जाना।

नाथोजी कहते हैं – हे वील्ह! इस प्रकार से एक सौ पचपन गाँव सुखनखाँ के नाम से थे। वे सभी जीव हत्या छोड़कर बिश्नोई पंथ के पथिक बने। इस प्रकार से जहाँ–तहाँ भी बिछुड़े हुए जीव थे, उनको वापिस सत्पंथ के पथिक बनाया।

श्री जाम्भोजी भ्रमण करते हुए काबुल से मुलतान चले आये, वहाँ सूचका पहाड़ पर आसन लगाकर बैठे थे। तेरह खान और बारह काजी दर्शनार्थ आये। जो आये थे उनका पाप ताप मिल गया था। उन्होंने देखा था कि कोई फकीर पहाड़ पर बैठा सिद्धि देखना चाहता था। काजी ने वह कपड़े में लपेटी हुई हड्डी दिखाते हुए कहा कि हे पीर जी, इस कपड़े में लपेटा हुआ क्या है आप सत्य बतलाइए?

जाम्बेश्वरजी ने हंस करके कहा– इसमें तो सोना है। काजी ने तुरन्त कपड़ा हटाया और देखा कि उसमें तो सचमुच सोना ही हो गया। लपेटी तो हड्डी थी, किन्तु यह तो सोना बन गई। काजी आश्चर्य चकित होकर सोने की लकड़ी देख रहा था। श्री देवजी ने उन पच्चीस जनों की पहचान की और उन्हें उपदेश देते हुए कहा –

हे प्रहलाद पंथ के बिछुड़े हुए जीवों! आगे से कभी जीव हत्या नहीं करना। यह तुम्हारा कार्य नहीं है। यह सोना अपने घर ले जाओ और हक की कमाई करो। उनतीस नियमों का पालन करते हुए सत्पंथ के अनुयायी बनकर वापिस अपने गुरु प्रहलाद से जा मिलोगे।

हे वील्ह! इस प्रकार से यह बिश्नोई पंथ चला था और आगे अनेक प्रकार से विस्तार को प्राप्त हुआ था। उन सभी ने पृथक् पृथक् प्रणाम किया और सदा–सदा के लिए अहिंसक होकर अपने जीवन को व्यतीत किया।

वहां पर मुलतान में श्री देवजी सूचका पहाड़ पर विराजमान थे। उस समय उनके पास में सरफअली और हसन अली दोनों आये और कहने लगे– यदि आप स्वयं खुदाताला ईश्वर है तो कुछ ईश्वरीय चरित्र दिखाना होगा। हम लोग तभी मानेंगे अन्यथा हम पाखण्ड को नहीं मानते हैं। आप हमें चार बात का परचा दीजिए कि जमीन में गढ़ा हुआ धन कहां है, यह

बतलाइए ? दूसरा परचा यह दीजिए कि मृतक पशु को पुनः जीवित कर दीजिए। तीसरा परचा यह दीजिए कि हम आपके शरीर पर चोट मारेंगे तो भी आपके शरीर में घाव न हो पाये। चौथा परचा यह होना चाहिए कि आप खाना-पीना न करें। यदि ये चार परचे पूर्ण हो जाये तो आप ईश्वरीय अवतार हैं अन्यथा आप कोई साधारण फकीर ही हैं।

जम्भेश्वर कहने लगे- आप लोग इस पहाड़ी के उत्तर की तरफ उस पीपल को देख रहे हो, उसके नीचे चार टोकणा जमीन में दबे हुए हैं। ये चारों बरतन अनहरद ने रखे थे। सरफअली पूर्व जन्म में अनहारद ही था, उन टोकणों पर नाम लिखा हुआ है। हे सरफअली! पूर्व जन्म का तुम्हारा ही गाढ़ा हुआ धन वह तेरा ही है उसे ले ले। तुम्हें इस धन की वजह से पूर्व जन्म की याद हो आयेगी। अनेकों जन्मों में भटका हुआ मनुष्य वापिस अपने स्थान में, धर्म में कभी न कभी तो आ ही जायेगा।

हे हसन अली! तुम्हारी कोख में यह हींग का थैला है, इसे तुम धरती पर रखो और फिर ईश्वरीय कारामात देखो। हसन अली ने श्री देवजी के कथानानुसार ज्योंहि थैला नीचे रखा, त्योंहि उस थैले में से एक मृग निकल कर वन में छलांग लगाता हुआ भाग गया। हे हसन! तुम्हारे हाथ में तलवार है इसी से ही मेरे शरीर पर मार कर देखो। आज्ञा सुनकर हसनअली ने शरीर पर तलवार चलाई, किन्तु कहीं भी शरीर में स्पर्श नहीं कर सकी। हवा में खाली ही निकल गई। जिसके शरीर में तीक्ष्ण तलवार का घाव नहीं लग सका तो वह शरीर तो दिव्य ही होगा। इन पांच महाभूतों से तो शरीर की उत्पति नहीं होगी। तब खाना-पीना भी किस लिये होगा। पांच तत्वों द्वारा निर्मित शरीर की रक्षा हेतु खाना-पीना आवश्यक है। इस प्रकार से चारों परचे पूर्ण हुये। अतिशीघ्र ही काजी और खान श्री देवजी के परचित हुये, उसी समय श्री देवजी ने उनको शब्द सुनाते हुए उपदेश दिया- शब्द "ओ३म्! सुणरे काजी सुणरे मुला .... दोहा" सरफहसन प्रचाविया, गउ छुड़ाई देव।

सतगुरु शब्द सुनावियो, तिसी समय को भेव।
हज काबै का हज करां, काबुल सुखनखान।
सेफन अली हसन अली, इह प्रचे मुलतान।
इनकू प्रचा देय के, आये संभ्रस्याम।
जो बाड़े के जीव थे, तिन्हीं तिन्हीं सूं काम।

-कृष्णानन्द आचार्य
अध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी
मो.: 9897390866

Be a Phoenix

Don't mix up in the deepest sorrow of life

Don't give up when your encounter with defeat

Rise up and reform yourself like a phoenix.

Punctually, complete your deeds.

Eventually, you will be on your destination

Take up your shortcomings and reform yourself like a phora

Frequently, light to the bitter and

Rarely, you will be on the peak of mourning

Get up from troubles and revive yourself like a phoenix

Amandeep D/o Satpal Karwasra
Badopal, Fatehabad

कवि हीरानन्द कृत हरजस

हिंडोलणों (राग मलार)

कामण चली हिंडोलणै, गावै आळ जंजाल।
झंभ अचंभो न गावही, जो बचे जमकाळ॥1॥
हांसा लोहट सूं कहै, सुरग तणां आकार।
सुर नर गण गद्रफ देवता, म्हारै ऊभा पोळ दवार॥2॥
दूदा देसूँटे गयो, मन मैं घणो अधीर।
कोहर ऊपर निरखियो, जुग तारण झंभ वीर॥3॥
थळी ओट दूदो मिल्यौ, तूठ्यौ सारै काज।
जब लग खांडो राखसी, तब लग निहचळ राज॥4॥[51]
सरस हिंडोलणों, संमरथळ झूलै साघ॥टेक॥52
दोइ सील संजम खंभ रोपै, नांव वेड़ी अधार।
चार डांडी सरल सुन्दर, बेद कै झणकार।
सत्य धीरज बणै मरवा, जड़त प्रेम सुवार।
सूरत पटड़ी बैठ कै, तुम झूलो जंभ दुवार॥1॥
हांसा लोहट भाग पूरै, जिण लियै उर लाय।
नौरंगी कै भात ल्याए, संग साहिल्या आय।
सैयां झीमां रूपां वरियां, पूर्व प्रीत विचार।
दोय कवल आगै घरै लाछां आए मंगळवार॥2॥
भूवा तांतूँ चली झूलण, नायकी लीवी बुलाय।
अजबदे सबीरदे जहाँ, झाली पोहूती आय।
लोचां गौरां और मांगौ, पूल्ह वचन विचार।
ऊदो अतली हेत सेती, झूलै जम्भ दुवार॥3॥
राव दूदो टोहा ठुकरा, केल्हण वरसंघ लेख।
लोहापांगळ भींया परच्या, सोवन नगरी देख।
रावण गोयंद लखमण पांडू, मोती एकै भाय।
रणधीर अली सैंसा साला, सहजे देत झुलाय॥4॥
खिलां नाथा पूरब डूमां, राणां प्रीति विचार।
काजा बूढा लूणा सायर, आए पूल्ह पंवार।
धना बिछू सुगणी भंवरा, चेला कुळचंद प्यार।
पहळाद की प्रतग्या काजै, विसन रो अवतार॥5॥
महराज दाचंद और घाटम, नूरां थापन हरै।
खेता धारू जोखा वैरा, प्रीति हिरदै धरै।
मंगोल रेड़ो हासम कासम, संतां सदा सहाय।
तापस ऊधोदास आए, पांचूं कूँ समझाए॥6॥
रावळ जैतसी सांगा रांणा, लूँका मालदे राव।
महमदखां अरु मुल्ला सधारी, आय परसे पांव।
साह सिकंदर साह स्वांयत, सेख सद्दू जांण।
कान्हा तेजा अल्लू चारण, वळ-वळ करत वखांण॥7॥
हुकम ऊदै दीन बोल्यौ, वील्ह कियौ उपदेस।
सूजा सूरण आलम केसा, ग्यान का परवेस।
चंदण रायचंद जसा पंयायण, सबद का आचार।
हीरानन्द की अरज इतनी, सगति पार उतार॥8॥

भावार्थ- स्त्रियां झूलों पर चढ़ी हुई संसार के चरित्रों को गाती हैं, वे सतगुरु श्री जाम्भोजी महाराज के गुणगान नहीं करती हैं, जिनके यशोगान से मृत्यु और यम से बचा जा सकता है। हांसा माता लोहट से कहती हैं, यह हमारा घर स्वर्ग बन गया। देवता, मनुष्य, गन्धर्व आदि हमारे दरवाजे पर खड़े हैं। जब दूदे मेड़तीये को देश निकाला मिला था, तब वह अपने मन में बड़ा दु:खी था, उसने श्री जाम्भोजी महाराज को कुएं पर पहचाना था। जब दूदा जाम्भोजी की शरण में गया तो उन्होंने उसे एक खांडा प्रदान किया और आशीर्वाद दिया कि जब तक यह खांडा तुम्हारे पास रहेगा, तुम्हारा राज्य अटल रहेगा। (संभराथल में सरस हिंडोलना है)

जहां संत लोग झूलते हैं, उस हिंडोलने के सील, संयम के दो स्तम्भ हैं और उसका आधार नाम है, चारों वेदों के समान उसकी चार डांडियां है, जिनमें वेदों की ध्वनि उपत्न्न होती है, जहां सत्य और धैर्य रूपी मरवे की सुगन्धी है, प्रेम से सबद की पटड़ी पर बैठकर सुरति चलती है, जो अपने पति पार ब्रह्म के पास पहुंचती है, सतगुरु श्री जाम्भोजी महाराज का ऐसा झूला है। हांसा और लोहट के पूर्ण भाग्य है, जिन्होंने इन पूर्ण ब्रह्म को हृदय से लगाया है, जाम्भोजी महाराज अपने साथियों को साथ लेकर नौरंगी के भात भरने आए। सैयां, झीमां, रूपा, वरिया आदि ने अपने पूर्व कर्मों से उन्हें पहचाना, लाछां प्रीति में उनसे दो कदम

आगे हैं। भूवा तातूं भी झूलने चली और उन्होंने नायकी को भी अपने साथ लिया, अजबदे और सबीरदे भी वहां थी और झाली रानी भी वहां पहुंच गई, लोचां, गोरां और मांगो तथा पूल्ह ने भी उनके वचनों का विचार किया, ऊदो-अतली भी प्रेमपूर्वक जाम्भोजी के इस झूले में झूले।

राव दूदा, टोहा, ठुकरा, केल्हण, वरसिंह, लोहापांगल, भीयां आदि भी स्वर्ण नगरी संभराथल को देखकर परचे। रावण, गोयद, लक्ष्मण, पांडू, मोती, रणधीर अली, सैंसा, साला आदि एक भाव होकर सहज ही इस झूले में झूले। खींया, नाथा, पूरब, डूमा, राणा, काजा, बूढ़ा, लूणां, सायर, पूल्ह पवार, धनां, बिन्दू, सुगणी, भवरा, चेला, कुलचंद आदि ने भी जाना कि प्रह्लाद के दिये गये वचनों के कारण स्वयं विष्णु ने अवतार लिया है। महराज, दाचद, घाटम, नूरां थापन, खेता, धारू, जोखा, वैरां, मंगोल, रेड़ो, हासम-कासम, तापस ऊघोदास आदि ने भी अपने पांचों विषयों को वश में करके संतों के सहायक जाम्भोजी महाराज से अपने हृदय में प्रीति की। रावळ जैतसी, सांगा राणा, लूकां, मालदे राव, महमद खां और सधारी मुल्ला ने भी जाम्भोजी महाराज के चरणों का स्पर्श किया। सिकन्दर शाह स्वांयत शाह, खेख सदू ने भी उन्हें जाना। कवि कान्हों, तेजो, अलू चारण ने भी बार-बार जाम्भोजी का वर्णन किया है। जाम्भोजी की आज्ञा से ऊदोजी बिश्नोई पंथ में दीक्षित हुए और वील्होजी ने उनका उपदेश लोगों को बताया। सूजा, सूरण, आलम, केसोजी ने भी इस ज्ञान रूपी नदी में प्रवेश किया। चंदण, रायचंद, जसा, पंचायत आदि ने जाम्भोजी के शब्दों को जाना, हीरानन्द कहते हैं - हे जाम्भोजी महाराज, मुझे पार उतारो और आपकी शरण में लेवो।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

कविता

तरू हित देह कटाई दी

क्षुब्ध विश्व जाग उठा, धरा भी रोती सुनाई दी,
मरू की पाक धरा पर अलबेली अलख दिखाई दी,
प्रकृति की विरह हरण की अनुगुंज सुनाई दी,
प्रकृति प्रेमी पथ पर अहिंसा की लहर दिखाई दी ॥

मध्य सदी से मरूधरा में, महत्ता तरु की दिखाई दी।
मरू तरु की विरह वेदना, लिपटी नार में दिखाई दी।
अमर अमृता जग प्रणेति, तरु हित देह कटाई दी ॥

मरूधर भोम तरु काटने आया गिरधर भण्डारी,
ढोल डंके फरमान, सुनो परगना नर नारी,
राजन् के आदेश से कटेगी खेजड़िया सारी,
इस काज को करने में करो सहायता हमारी ॥

पथ सम्मुख विपत्ति भई,
राम बाण अमृता दी,
मरू तरु की विरह वेदना,
लिपटी नार में दिखाई दी।
अमर अमृता जग प्रणेति,
तरु हित देह कटाई दी ॥

अमृता अग्र पथगमी विटप विरह हरी नर नारी,
तरु पहले तन कटे खड्ग चोट आस्र ओघ भारी,
विटप हित देह तज दियो संदेश जग आधारी,
मरु भोम अमृता देवी वन माता अवतारी ॥

कटते तरु से पहले तन,
ने जग में प्रेम गवाई दी।
मरू तरु की विरह वेदना,
लिपटी नार में दिखाई दी।
अमर अमृता जग प्रणेति,
तरु हित देह कटाई दी ॥

-गौरव बिश्नोई सुपुत्र श्री सुशील राड़
रावत खेड़ा (हिसार)
कक्षा 11, आदर्श व.मा. विद्यालय, चौधरीवास
मो.: 9671107409

बधाई संदेश

मेजर मनदीप डेलू सुपुत्र श्री तेन्द्र कुमार डेलू, निवासी गांव भिरड़ाना, तह. व जिला फतेहाबाद की भारतीय सेना में कैप्टन रैंक से मेजर के पद पर पदोन्नति हुई है।

देवाराम बिश्नोई सुपुत्र श्री भेंपाराम चोटिया, निवासी फींच, तह. लूणी, जिला जोधपुर को पुलिस विभाग में उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्यों के लिए IGP जोधपुर द्वारा अति उत्तम सेवा चिह्न से सम्मानित किया गया है।

अनिल थालौड़ सुपुत्र श्री हवा सिंह थालौड़, निवासी गांव बड़वा, तह. सिवानी, जिला भिवानी का चयन मारुति सुजुकी इंडिया में सहायक प्रबन्धक के पद पर हुआ है।

अंजली सुपुत्री श्री निहाल सिंह बिश्नोई निवासी गांव सदलपुर, तह. आदमपुर, जिला हिसार ने इंग्लैंड की प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी ऑफ योर्क से कला संकाय में स्नातक की डिग्री द्वितीय श्रेणी में प्राप्त की है।

मनीषा सुपुत्री श्री निहाल सिंह बिश्नोई निवासी गांव सदलपुर, तह. आदमपुर, जिला हिसार ने इंग्लैंड की प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी ऑफ योर्क के वेन्टवर्थ कॉलेज से IBSM में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है।

मीनल धारनियां सुपुत्री श्री पवन धारनियां निवासी भूना, जिला फतेहाबाद का चयन पीस (Peace) ऑफिसर के पद पर टोरंटो पुलिस कनाडा में हुआ।

मेघालय डीजीपी डॉ. एल.आर. बिश्नोई ने पैराजंप में रचा नया इतिहास

असम-मेघालय कैडर के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी तथा मेघालय के डीजीपी डॉ. एल.आर. बिश्नोई ने 5 हजार फीट की ऊंचाई से 5 बार सफलतापूर्वक पैराजंपिंग करके इतिहास रचा है। वो डीजीपी की रैंक पर रहते हुए ऐसा करने वाले पहले व्यक्ति बन गये हैं। बिश्नोई समाज के पुलिस विभाग में सर्वोच्च पद पर कार्यरत अधिकारी डॉ. एल.आर. बिश्नोई के इस कारनामे पर मेघालय के मुख्यमंत्री कोनराड के संगमा ने उन्हें बधाई दी है। मुख्यमंत्री कोनराड के संगमा ने ट्वीट करके कहा कि हिंडन एयरबेस पर 5000 फीट की ऊंचाई से पांच पैराजंप के सफल होने पर बधाई। ऐसा करने वाले भारत के पहले डीजीपी रैंक के अधिकारी बन गए हैं, जिन्होंने यह गौरव प्राप्त किया है। यूपी के गाजियाबाद हिंडन एयरबेस में गत 13 मार्च से उनका 10 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर शुरू हुआ। उनके साथ पैराजंप करने वालों मे कुल 20 लोग थे, मगर डीजीपी रैंक के वे अकेले अधिकारी थे। इस दौरान कई तरह के प्रशिक्षण दिए गए, जिनमें शारीरिक व मानसिक प्रशिक्षण आदि शामिल थे। उन्होंने बताया कि 10 दिनों का गहन प्रशिक्षण के बाद उस पल का अनुभव किया, जिसके लिए वह बेताब थे। पैराशूट पहनने के बाद वह बहुत उत्साहित महसूस कर रहे थे, जैसे कि वे अपने देश को बचाने के लिए युद्ध के मोर्चे पर जा रहे हों। युवा अधिकारियों के साथ ट्रेनी बनना एक शानदार अनुभव था। अपने अनुभवों को साझा करते हुए डीजीपी बिश्नोई ने कहा कि उन्हें पूर्ण विश्वास है कि पैराजंप में बहुत सारी उम्मीदें हैं और किसी भी व्यक्ति के साहसिक कौशल को बदलने की क्षमता है। उन्होंने आशा जताई कि उनके इस प्रदर्शन के बाद युवा अधिकारियों के मन में पैराजंप के प्रति आकर्षण और बढ़ेगा। इसके लिए बस मन में रोमांच की भावना होनी चाहिए।

आप सबकी इन उल्लेखनीय उपलब्धियों पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

परलोक-विचार

(तत्त्वदर्शी महात्मा श्रीतैलंग स्वामीजी का उपदेश)

पूर्व और पर- पिछला और अगला जन्म है अथवा नहीं- यह जानने के लिए यदि स्थिर-चित्त से विचार किया जाए तो तीनों जन्म- पूर्व, वर्तमान और भविष्यत् स्पष्ट दिखाई देंगे। पूर्व जन्म में मैंने जैसे कार्य किये हैं और मैं जिस प्रकार के स्वभाव का मनुष्य था, मृत्यु के अनन्तर कर्म फल के अनुसार उन्हीं सब परमाणुओं को लेकर मेरी यह वर्तमान देह बनी है। वर्तमान जीवन में मैंने अपने द्वारा अच्छे-बुरे जैसे कुछ काम किये हैं, उन सबको मैं भलीभांति जानता हूँ। अच्छा काम करने से अच्छा फल और बुरा काम करने से बुरा फल भोगना पड़ेगा। इस समय जो व्यक्ति विचार कर देखेगा, वही जान सकेगा कि वर्तमान जीवन में मैं किस प्रकार का मनुष्य तैयार हो रहा हूँ और मेरे इन सब कामों के अनुसार भविष्य-जीवन में कैसे स्वभाव और किस प्रकार की अवस्था का आदमी बनूँगा। प्रयत्न करने पर जिस बात को स्वयं जान सकते हैं, उसे जानने के लिए दूसरे की सहायता की आवश्यकता ही क्या है?

वर्तमान जन्म का इहलोक ही पूर्व जन्म का परलोक और वर्तमान जन्म का परलोक ही भविष्य जन्म का इहलोक है। इस स्कूल- देह के भीतर दूसरी देह है, उसका नाम सूक्ष्म-देह है एवं उसके भीतर भी एक अन्य देह है, जिसका नाम कारण- देह है। केले की छाल की भांति अवस्थित यह त्रिविध देह ही संसार -संज्ञा में विराजमान है। मनुष्य देह का संघटन, आकृति, वर्ण, स्वभाव, विद्वान् अथवा मूर्ख, कर्कश अथवा नम्र, धार्मिक या अधार्मिक, साधु अथवा चोर, सरल या कुटिल, राजा अथवा जमींदार, मध्यवित्त या गरीब, उच्च वंश में जन्म अथवा नीच वंश में जन्म आदि सभी पूर्व जन्म के कर्म फल के अनुसार वर्तमान देह के रूप में प्राप्त हुए है। इसी प्रकार फिर इस जीवन का कर्मफल लेकर अगले जन्म की देह ही आकृति बनेगी।

जीव के भूमिष्ठ होने से आरम्भ कर लयपर्यन्त जो समय है, वही उसकी परमाणु है। यदि आध्यात्मिक अर्थ को लिया जाए तो जीव की परमाणु अनन्त है। जीव अक्षय और अमर है। जीव के ध्वंस होने पर भी उसका उपकरण कभी नष्ट नहीं होता। साधारण जनों का विश्वास है कि जो जीवन जितना पुण्यवान् है, उसकी परमाणु भी उतनी ही अधिक होती है और वह तदनुसार ही अधिक समय तक जीवित रहता है; परन्तु यह भूल है। जीव संसार से जितना दूर रहेगा, उतना ही उसे पाप स्पर्श नहीं कर सकेगा। जीव कर्मफल भोगने के लिये संसार में आता है। कारण, संसार ही कर्मफल -भोग का स्थान है। अतएव जितने दिनों तक जीव का कर्मफल भोग समाप्त नहीं होता। जितने दिनों तक जीव पाप से मुक्त नहीं होता, उतने दिनों तक उसे संसार में रहना पड़ता है।

जो पुण्यवान् है, वह अधिक दिनों तक संसारवासी नहीं होता। जो जितना पापी है, उसे उतने ही दिनों तक संसार में रहकर कर्मफल भुगतना पड़ता है। जिसका कर्मफल शेष हो जाता है, वह संसार से चला जाता है। जिसका जीवन जितना शीघ्र लय को प्राप्त होता है, वह उतना ही पुण्यवान है। उसका जीवन उतना ही पाप-शून्य है। पाप-शून्य होने से वह ईश्वर में लय हो जाता है, उस समय उसकी आयु असीम है। जब तक ईश्वर की सत्ता विद्यमान रहेगी, तब तक उसकी सत्ता वर्तमान रहेगी।

मनुष्य जैसे आगे-आगे पुण्य करता रहता है, उसका फल भोग भी दिन-रात की तरह आगे-आगे चलता रहता है। इसीलिये कर्मफल शेष न होने से बार -बार संसार में आना पड़ता है। उसके जन्म और मरण का ताँता बँधा रहता है। जिनका यह विश्वास है कि पुनर्वार जन्म नहीं ग्रहण करना पड़ता, मृत्यु ही उसका

शेष है, उनकी यह धारणा गलत है। ईश्वर है, यह स्वीकार कर लेने पर पुनर्जन्म भी अवश्य मानना पड़ेगा। यदि ईश्वर है तो मनुष्य की आत्मा भी है। ईश्वर का ध्वंस नहीं, अतएव ईश्वर की शक्ति आत्मा का भी विनाश नहीं। यदि पुनर्जन्म न हो तो ईश्वर को कभी दयामय नहीं कहा जा सकता। कारण, इस जीवन में कोई राजा, कोई प्रजा, कोई धनी, कोई दरिद्र, कोई अन्धा, कोई खंज, कोई उत्तम कुल में और कोई नीच वंश में जन्म ग्रहण क्यों करते हैं? यह विषमता क्यों है?

इसका स्पष्ट प्रमाण- जिस जीव ने जैसे-जैसे कर्म किये हैं, उसका भोग शेष न होने तक उसे किये हुए कर्मफल के अनुसार बार-बार देह धारण करनी पड़ती है। जो जन्मान्ध है, उसने इस जीवन में कुछ भी नहीं देख पाया, किन्तु अन्य सब अच्छी तरह देखते हैं- इसका क्या कोई कारण नहीं है?

जान पड़ता है, यह कोई भी अस्वीकार नहीं करेगा कि पूर्वजन्म के देह, आकृति, स्वभाव, ज्ञान आदि सभी पूर्व जन्म के कर्मफल के अनुसार ही बने हैं, जिसने जैसे कर्म किये हैं, उसकी आकृति और स्वभाव ठीक उसी प्रकार के बने हैं। जो चोरी करके जीवन व्यतीत कर रहा है, अगले जन्म में उसकी आकृति और स्वभाव ठीक दस्यु की भांति रूक्ष रहेंगे। जो धर्म-चर्चा करके जीवन व्यतीत कर रहा है, उसकी आकृति सौम्य और स्वभाव अति कोमल होगा।

एक आदमी जीवनभर धर्म-चर्चा करके भी सुखी नहीं रहा। संसार में नाना प्रकार के कष्ट उठाये और एक आदमी ने अति घृणित कार्य- लाम्पटय अथवा दस्युवृत्ति करके भी सुख में जीवन व्यतीत किया, इसका स्पष्ट प्रमाण पूर्वजनम ही है। जिस व्यक्ति ने धर्म-चर्चा या धर्माचरण करके इस जीवन में कष्ट पाया है, वह एक समय अवश्य सुख-भोग करेगा। इस जीवन में उसने जो कष्ट पाया है, वह उसके पूर्व जन्म के बुरे कर्म का फल था, जिसके भोग का समय उपस्थित होने से कष्ट उठाना पड़ा और दूसरे आदमी के लिए सम्प्रति पूर्व जन्म के शुभ फल भोगने का समय उपस्थित हुआ, इसलिये उसने सुख से जीवन व्यतीत किया, किन्तु इसके बाद उसे बड़ा कष्ट भुगतना होगा। कितने ही लोग कह देते हैं कि पाप-कर्म करने में प्रवृत्ति एवं पुण्य कर्म करने में निवृत्ति ईश्वर की ही इच्छा और प्रेरणा से होती है, परन्तु यह बड़े अज्ञान की बात है।

ऋतु और इन्द्रियाँ सभी अच्छा-बुरा कार्य करती हैं। राग करने से ही अनिष्ट होगा। कामना होने से ही प्राप्ति की इच्छा होगी। लोभ करने से ही पर द्रव्य- अपहरण की चेष्टा होगी। अहंकार होने से ही दूसरे का अनिष्ट-चिन्तन करना होगा आदि। जिसका जो धर्म है, वह अपना कार्य करता ही है। इसलिये ब्रह्मा ने मनुष्य को हिताहित का ज्ञान दिया है और सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया है। मृत्यु ही कभी शेष नहीं हो सकती। यदि मृत्यु ही शेष हो तो ईश्वर को प्रतिदिन संख्यातीत आत्माएँ उत्पन्न करने का कार्य करना पड़े तथा मनुष्य की अपेक्षा उसका यह गोरखधन्धा कितना ही अधिक बढ़ जाय और जीवन कष्टमय हो जाय।

देह के विच्छिन्न होने पर भी आत्मा का अपकार उसी प्रकार नहीं होता, जैसे घर के जलते रहने पर भी गृह के अभ्यन्तरस्थ आकाश की कुछ भी क्षति नहीं होती। आत्मा हन्ता भी नहीं और हत भी नहीं। द्वेष ही संताप का मूल है, द्वेष ही संसार का बन्धन है और द्वेष ही मुक्ति का प्रतिबन्धक है, अतएव यत्नपूर्वक द्वेष का परित्याग करो। सुख-दु:ख देह के नहीं हैं, आत्मा के भी नहीं है। यद्यपि आत्मा वायु की भाँति निर्मल और निर्लेप है, तथापि जीव ईश्वर की माया से मोहित होकर मैं सुखी हूँ, मैं दु:खी हूँ, इस प्रकार अपने आप ही समझता है। विश्वमोहिनी उस अनादि अविद्या का नाम ही माया है। जन्मते ही जीवन उस अविद्या अर्थात् माया के साथ सम्बन्ध हो जाता है, इसी से वह संसार में बँध जाता है। बुद्धि-इन्द्रियादि के समीप अवस्थिति के कारण आत्मा निर्मल होने पर भी तत्तत्-पदार्थ के समगुण सम्पन्न प्रतीत

होता है। मन, बुद्धि और अहंकार जीव के सहकारी है। अपने किये हुए का फल अपने को ही भोगना पड़ेगा अर्थात् जिसका जैसा कर्मफल है, उसे वैसा ही कर्म फल भुगतना होगा। फिर सृष्टि के समय जीव मन प्रकृति के साथ सम्बन्ध लेकर देह धरण करने को बाध्य होता है। जब तक जीव मुक्त नहीं हो जाता, तब तक उसे इसी रूप में भ्रमण करना पड़ता है। देह मनस्ताप का मूल है, देह संसार का कारण है और कर्म-फल से ही उस देह की उत्पत्ति है। कर्म दो प्रकार का है- पाप और पुण्य। उस पाप और पुण्य के अंश के अनुसार ही देही को सुख-दु:ख प्राप्त होते हैं। जितना पाप, उतना ही दु:ख और जितना पुण्य, उतना ही सुख भोगना पड़ेगा। यह सुख-दु:ख दिन-रात की भांति परस्पर सापेक्ष है और भोग के बिना इनका शेष नहीं होता। भोग शेष हुए बिना मुक्ति नहीं होती।

आत्मा शरीर में कर्ता रूप है। जिस वस्तु के जीव-देह से विच्छिन्न होने पर जीव का जीवन नहीं रहता, इन्द्रियादि फिर कोई कार्य नहीं कर सकतीं, वही वस्तु जीव का आत्मा है। आत्माहीन देह को सुख-दु:ख कुछ भी अनुभव नहीं होता। रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, ज्ञान कुछ भी नहीं रहता। अतएव यह निश्चय है कि आत्मा ही देह का कर्ता है। सुख-दु:ख ज्ञान के द्वार स्वरूप हैं। आत्मा को तिरस्कार या पुरस्कार देने के लिए उस आत्मा के वासस्थल देह का प्रयोजन है। क्लेश एवं विषाद का अनुभव शरीर की सहायता पाये बिना आत्मा को नहीं हो सकता। आत्मा एकाकी चला जाता है- देह उसके साथ नहीं जाती, इसलिये आत्मा को दण्ड देना असम्भव है। प्रत्येक जीव-देह में ईश्वर आत्मा रूप से वर्तमान है।

जीवात्मा परमात्मा का अंश है। जैसे पाप अनेक प्रकार के हैं, वैसे ही उनके दण्ड भी अनेक प्रकार के हैं। अनुपात ही पाप का प्रधान दण्ड और हर्ष ही पुण्य का प्रधान पुरस्कार है। मनुष्य का हृदय पाप-पुण्य के निराकरण का तराजू है। पुण्य से हर्ष और पाप से अनुताप अपने आप ही मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होकर उसके किये हुए कार्य का उपयुक्त पुरस्कार प्रदान करते हैं। इस दण्ड को देखकर ही जो बुद्धिमान है, वे स्वयं पाप से बचते हैं। पंचभूत केवल परमाणु समष्टि मात्र है। परमाणु अविनश्वर हैं। अतएव भूत समष्टि का भी विनाश नहीं है। मृत देह फिर उसी पंचभूत में मिल जाती है। जो मनुष्य आज तुम्हारे सामने विराजमान है, उसका शरीर पूर्व जन्म में किस जीव के परमाणुओं द्वारा निर्मित हुआ है? उस भूतपूर्व जीव के पुर्नजन्म का फल रूप तुम्हारे सम्मुखस्थ मनुष्य है।

जो आत्मा जिस परिमाण में पाप से निर्मुक्त है, जो आत्मा जिस परिमाण में विष-वासना से शून्य है, वह आत्मा उसी परिमाण में उन्त है। धार्मिक की आत्मा पापात्मा की आत्मा से बहुत उन्नत है। उस उन्नतिशील आत्मा का वह उन्त स्वभाव देह त्याग करने पर भी नष्ट नहीं होता; प्रत्युत संसार की जो कुछ वासना, जो एक प्रवृत्ति थी, उसके बद्ध होने पर आत्मा क्रमश: उन्नति के पथ पर चलने लगता है। आत्मा पुरुष और देह प्रकृति है। आत्मा जब तक प्रकृति से संयुक्त नहीं होता, तब तक निष्काम और निर्गुण अवस्था में रहता है। प्रकृति के मिलने से ही उसकी इच्छा-प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। प्रकृति के मिलने से उसकी इच्छा प्रवृत्ति उत्पन्न होती है और प्रकृति से पृथक् होने पर फिर वह पूर्ववत् स्वभाव अर्थात् निर्गुण और निर्लिप्त भाव को प्राप्त होता है। इसका तात्पर्य यह है कि आत्मा की जब तक प्रवृत्ति वासनादि वर्तमान रहती है, तक तक वह पावन देह का आश्रय लिये रहता है और तभी तक वह सगुण, सर्वविषयों से लिप्त, वासनादि संयुक्त रहता है तथा देह का परित्याग करने पर फिर पूर्वभाव को प्राप्त हो जाता है। आत्मा प्रथम निर्गुण होने पर भी उसे देह के आश्रय से गुण सम्पन्न होना पड़ता है।

पश्वादि देह से मनुष्य देह लाभ करने में प्रकृति परिवर्तन के लिये अतिशय कष्ट और चेष्टा करनी पड़ती है। पशु से मनुष्य होना जितना कठिन है, मनुष्य

होकर मनुष्यत्व लाभ करना उसकी अपेक्षा भी कठिन है। शुभ कार्य के अनुष्ठान द्वारा मनुष्य देवत्व प्राप्त कर सकता है; किंतु अनायास प्रकृत मनुष्य नहीं हो सकता। समस्त भोग और आशा का परित्याग किये बना मुक्ति का द्वार नहीं खुलता। सकाम शुभ कार्यों के साधन द्वारा मुक्ति का पथ और भी दुर्गम बन जाता है। जीव देवलोक के ऐश्वर्य भोग में मत्त होकर भोगावसान में मर्त्यलोक में आने के उपुयक्त हो जाता है। इसलिये महापुरुष देवधामकी कामना नहीं करते। कारण, वह कर्मफल जन्य चिरस्थायी नहीं है। प्रकृत मनुष्यत्व लाभ करने के लिए सब इन्द्रियों का वेग संवरण करना होता है। रिपुवर्ग का वशीकरण, अन्त:करण का विशुद्धीकरण, प्राणिमात्र में समदर्शन, अभिमान-त्याग आदि मनुष्यत्व लाभ करने के प्रधान उपादान हैं। इनके अतिरिक्त शम, दम, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा एव उपरित- ये कतिपय गुण भी मनुष्य में होने चाहिये।

मनुष्यत्व लाभ हो जाने पर भी मुक्ति की इच्छा सहज में ही नहीं होती। विषय-भोग में जितने दिनों तक क्लेश की उपलब्धि नहीं होती, उतने दिनों तक जीव महाजितेन्द्रिय और योगीन्द्र होने पर भी मुक्ति लाभ नहीं कर सकता। वासना त्याग ही मुक्ति का मुख्य उपाय है। मुक्ति की इच्छा होने से ही मुक्ति पद लाभ होगा, यह बात नहीं है।

महापुरुषों का सदा संग न करने से मुक्ति का मार्ग दिखायेगा कौन? सत्पुरुषों का सहवास जीव के लिये सौभाग्य सापेक्ष है। इच्छा करने से ही साधु दर्शन नहीं होता। संतलोग प्राय: निर्जन स्थान में ही रहते हैं। वे कभी दृष्टिगोचर हो जाएँ तो भी सहज में पहचाने नहीं जाते और यदि पहचाने जा सकें तो वे रहने का अधिकार पा जाने पर भी उनके हृदय के भाव हम समझ नहीं सकते। नदी को पार करने के लिए जैसे नाविक से नौका लेनी पड़ती है, उसी प्रकार संसार-सागर से पार होने के लिए महापुरुष का सत्संग करना आवश्यक है। सत्संग के द्वारा सभी बातें सुलभ हो जाती हैं। धार्मिक की आत्मा धर्म-बल से क्रमश: उन्नत होकर अन्त में मोक्ष को प्राप्त हो जाती है। यह उन्नति एक महीने या एक वर्ष में नहीं होती। बहुत समय तक प्रयत्न करने पर मोक्ष प्राप्ति होती है। इसी प्रकार पापी की आत्मा क्रमश: अधोगति को पहुँचती है।

स्वर्ग और नरकवास अन्य कुछ नहीं है, केवल आत्मा की उन्नति और अवनतिमात्र है। आत्मा की उन्नति और अवनति के साथ अवस्थान्तर प्राप्ति के लिए उसका नाना स्थानों में और नाना प्रकार से जन्म होता है। इस विशाल विस्तृत जगत् में किसने कहाँ, किस भाव से पुनर्जन्म ग्रहण किया है, इसका अनुसन्धान नहीं होता, इसीलिये पुनर्जन्म पर जनसाधारण विश्वास नहीं करते। पूर्व जन्म और परकाल हम देख नहीं पाते। पुनर्जन्म प्राप्त हुआ है- इस प्रकार साक्षात में आकार किसी ने बताया नहीं। केवल अनुमान और युक्ति द्वारा ही सिद्ध करके उसमें विश्वास करना पड़ता है। नहीं तो धर्माधर्म, पाप-पुण्य किसी में भी भेद या पार्थक्य नहीं रहता।

लोग पाप करते हुए क्यों डरते हैं? केवल पुनर्जन्म में विश्वास रखने के कारण ही और इसी भय से कि फिर घोर यन्त्रणा भुगतनी पड़ेगी। इस जीवन में कोई विद्वान, कोई मूर्ख, कोई पण्डित, कोई ज्योतिषी, कोई उच्च श्रेणी का गायक और कोई वाद्ययन्त्र बजाने में निपुण है, इसका कारण यही है कि पूर्वजन्म में वह उस कला में निपुण था। इस जन्म में वही आत्मा है, केवल देह का प्रभेद है। यदि कर्मफल न होता तो अवश्य इतना भेद नहीं रहता। अच्छे-बुरे कार्यों के लिए ही जीव को विभिन्न अवस्थाओं में गिरना पड़ता है। अच्छे कार्य से आत्मा की उन्नति (ऊर्ध्व गति) होती है और बुरा कार्य करने से अवनति होती है।

साभार- कल्याण

- दिव्य चेतन शास्त्री
मण्डी आदमपुर, हिसार
मो.: 9253868354

संस्कार गीत- मृत्यु के गीत (भाग-2)

बिश्नोई पंथ में प्रचलित मृत्यु गीत दो प्रकार के हैं - मुंह ढकणा और हरजस।

अ) मुंह ढकणा- बिश्नोई समाज में किसी युवक अथवा युवती की मृत्यु पर गाये जाने वाले गीतों को मुंह ढकणा कहते हैं। वैसे मृत्यु अपने आप में दु:खद होती है पर किसी युवक अथवा युवती की मृत्यु वृद्ध की अपेक्षा अधिक दुखदायी होती है। युवक अथवा युवती की मृत्यु की इस दु:खद घड़ी में माँ-बाप के दु:ख को कम करने हेतु सभी सम्बन्धी संवदेना प्रकट करने के लिए मृतक के घर पहुँचते हैं। किसी भी युवक या युवती की मृत्यु की बात सुनकर हर कोई दु:खी हो जाता है। ऐसे में मृतक के सम्बन्धी का दु:खी होना तो स्वाभाविक है। मृतक का जो सम्बन्धी जितना मृतक के निकट को होगा, उसका दु:ख उतना ही अधिक होगा। ऐसे सम्बन्धी जब मृतक के घर संवेदना प्रकट करने जाते हैं तो स्त्रियाँ विलाप करती हुई मृतक के घर में प्रवेश करती हैं, पर उनके साथ जाने वाली जो अन्य स्त्रियाँ होती हैं, जिनका मृतक के साथ कोई निकट का सम्बन्ध नहीं होता, वे उनके साथ या अकेले में 'मुंह ढकणा' गीत की एक-दो पंक्तियाँ गाकर प्रवेश करती रही है। ये गीत अत्यधिक कारुणिक हैं, जिनके गाने से घर का वातावरण और अधिक कारुणिक हो जाता है। इसी कारण इन गीतों को मृतक के घर में प्रवेश करने के बाद या घर के आंगन में बैठकर नहीं गाये जाते। इसके साथ ही इन गीतों में किसी भी गीत को पूरा नहीं गया जाता। 'मुंह ढकणा' गीतों में युवक-युवती के जीवित रहने परिवार को मिलने वाले सुख व मृतक के अभाव में परिवार को होने वाले दु:ख का वर्णन किया गया।

आहुथे मत जाणो रे, म्हारो कोडे परणायो बिछड़यो।

बिश्नोई समाज में 'मुंह ढकणा' गीतों की संख्या बहुत कम है और ऐसे गीत बहुत ही कम स्त्रियों को कंठस्थ हैं। अब जब लोकगीतों का प्रचलन निरन्तर कम होता जा रहा है तो 'मुंह ढकणा' गीतों का गाया जाना लगभग बंद-सा ही हो गया है। पहले भी ऐसे लोकगीत अधिक लोकप्रिय नहीं रहे हैं, जिसके कई कारण रहे हैं। एक तो इन गीतों को समाज में प्राय: अशुभ माना जाता रहा है। इसलिए इन गीतों को कंठस्थ करने में किसी की कोई रूचि नहीं रही है। दूसरा ये गीत पूरे नहीं गाये जाते, इसलिए गीत के कितने और कौन से अंश को कंठस्थ किया जाए यह भी एक समस्या रही है। तीसरा कारण यह रहा है कि इन गीतों के गाने एवं सुनने में कभी किसी की कोई रूचि नहीं रही है। इतनी बाधाओं एवं कमियों के बाद भी इन गीतों का गाया जाना बिश्नोई समाज का एक वैशिष्ट्य ही माना जा सकता है।

ब) हरजस- बिश्नोई पंथ में दूसरे प्रकार के मृत्यु गीत वे है जो किसी वृद्ध स्त्री-पुरुष की मृत्यु पर गाये जाते हैं। ऐसे गीतों को हरजस कहते हैं। इनके अतिरिक्त ऐसे गीतों को भी हरजस कहा जाता है, जिनमें ईश्वर की महिमा का वर्णन रहता है। हरजस अर्थात्- हर + जस, यानी ईश्वर का यश या महिमा। ऐसे लोकगीत जिनमें भगवान की कीर्ति का वर्णन हो, उन्हें हरजस कहा जाता है। सामान्य रूप में लोग ईश्वर की भक्ति से सम्बन्धी गीतों को हरजस कह देते हैं। हरजस को लेकर विद्वानों से अलग-अलग मत व्यक्त किये हैं। डॉ. मनोहर शर्मा ने एक ओर तो राम-कृष्ण आदि अवतारों से सम्बन्धित भक्ति पदों को हरजस कहा है तो दूसरी ओर श्रीकृष्ण के जस गीतों को जिनकी रचना लोकगीतों के तर्ज पर हुई है, उन्हें हरजस माना जाता है। हरजस के गाने के अवसर एवं स्थान भी अलग-अलग हैं। बिश्नोई पंथ में हरजस दो प्रकार के हैं - एक वे जिनकी रचना जाम्भाणी कवियों के द्वारा हुई है और जिन्हें जाम्भाणी हरजस कहा जा सकता है। इनका मुख्य विषय स्वानुभूति, आत्म निवेदन, अध्यात्म और हरिगुण गान है।[2] ये सभी हरजस देसी राग-रागनियों में गाये हैं। इन हरजसों में अधिकतर की रचना 16वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी के मध्य हुई है। जाम्भाणी साहित्य में लगभग उनतीस कवियों के 182 हरजस उपलब्ध (29) दूसरे के हरजस 'लोक हरजस' है। ये लोक हरजस भी दो प्रकार के हैं - (1) एक वे जिनमें ईश्वर के यश, कीर्ति या गुणों के साथ-साथ ईश्वर के विभिन्न अवतारों के कार्यों का वर्णन रहता है।

इनमें गुरु जाम्भोजी से सम्बन्धित हरजस भी सम्मिलित है। ऐसे हरजस अमावस्या को या बिश्नोई समाज के द्वारा आयोजित विभिन्न मेलों पर गाये जाते हैं। (2) लोक हरजस में दूसरे प्रकार के हरजस वे हैं जो किसी वृद्ध स्त्री या पुरुष की मृत्य पर गाये जाते हैं। ये हरजस स्त्रियों द्वारा अलग-अलग लय में गाये जाते हैं, जिनमें किसी भी वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता है। बिश्नोई समाज में किसी भी मृत्यु पर गाने जाने वाले हरजसों में निम्नलिखित विषय चित्रित हुए हैं -

1. ईश्वर के अवतारों, कार्यों एवं गुणों का वर्णन।
2. मृत व्यक्ति के कार्यों एवं गुणों का विवेचन।
3. अच्छे कर्म एंव कर्मानुसार फल प्राप्ति।
4. मनुष्य का मोह-माया में ग्रस्त रहना एवं अच्छे कर्म न करने का पश्चाताप।
5. जीवन की क्षण भंगुरता एवं मृत्यु की अनिवार्यता का चित्रण
6. मनुष्य को ईश्वर भजन करने की शिक्षा।

बिश्नोई पंथ में मृत्यु-संस्कार का औसर तीसरे दिन करने की प्रथा है। समाज में ऐसा विश्वास है कि मृत्यु के बाद जीव तीन दिनों तक अपने भौतिक परिवार एवं सम्बन्धियों के साथ मृत्यु-लोक में रहता है।[3] तीन दिनों के बाद उसकी सांसारिक घर से विधिवत् विदाई हो जाती है और वह सद्गति को प्राप्त हो जाता है। तीसरे दिन सगे-सम्बन्धी एवं मित्रगण विधिवत् रूप से मृतक के घर शोक प्रकट करने पहुँचते हैं। इसको खर्च, पणीढाळ एवं औसर कहते हैं जिनमें मृतक से सम्बन्ध रखने वाले सभी स्त्री-पुरुष संवेदना प्रकट करने पहुँचते हैं। स्त्रियों में जो मृतक के बहुत निकट सम्बन्धी स्त्री होती है, वह तो अन्य स्त्रियों के आगे-आगे विलाप करते हुए मृतक के घर में प्रवेश करती है और उसके साथ आने वाली अन्य स्त्रियाँ एक विशेष हरजस गाकर आती हैं, जिसे हिंडोला या हर का हिंडोला कहते हैं। बिश्नोई समाज में यह हरजस सबसे अधिक लोकप्रिय है और यह सर्वाधिक गाया जाता है।

पूरी आयु प्राप्त करके जब किसी का स्वर्गवास होता है तो वह दु:ख का नहीं, अपितु प्रसन्नता का विषय माना जाता है। कई जातियों में तो सौ वर्ष पूरे करने वाले मृतक की शवयात्रा गाजे-बाजे के साथ निकाली जाती है तथा उस पर रुपयों एवं फूलों की वर्षा की जाती है।[4] बिश्नोई समाज में ऐसा नहीं होता। वहाँ इसे पुण्य का फल समझकर उसके पीछे औसर के दिन कन्याओं का सामूहिक विवाह किया जाता रहा है। इस तरह के विवाह का आधार आर्थिक के साथ-साथ धार्मिक भी रहा है। यद्यपि आजकल इस तरह के विवाह लगभग बंद हो गये हैं। इस तरह वृद्ध या वृद्धा की मृत्यु पर गीत गाने का एक कारण हरि गुण-गान के द्वारा मृतक को स्वर्ग पहुँचाना रहा है तो दूसरा कारण मृतक द्वारा पूरी आयु प्राप्त करने की प्रसन्नता भी रही है।

'हर का हिंडोला' हरजस समाज के विभिन्न विशेषताओं से युक्त है और यह गाने में भी अत्यन्त सरल हैं। इसी कारण इस हरजस का इतना महत्व है। पाठक इस हरजस की विभिन्न विशेषताओं को जाने व समझे, उससे पूर्व इस हरजस के मूल रूप से परिचित होना आवश्यक है। इसलिए यहाँ बिश्नोई समाज में प्रचलित हर का हिंडोला को सम्पूर्ण रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

हर का हिंडोळा

कठोड़ै सूं आई बडेरो थानै पालकी, कठोड़ै, सूं आयो रे विवांण ?
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
सुरगां सूं आई बडेरो पालकी, हर वरगै सूं आया रे विवांण।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
कण रे घड़ाई बडेरो थानै पालकी, कण लगाया हर रा जूंण ?
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
बेटे घड़ाई रामइया म्हानै पालकी, पोते लगाया हर रा जूंण।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
कण थारी लीनी बडेरे परकमा, कण लिया थानै उतार ?
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
पोते लीनी म्हारी परकमा बेटे लिया रे उतार।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
चख पाणी ओ जामी म्हारा चरचरा, थानै मांय गंगाजल नीर।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
कण खोलाई बडेरो हाटड़ी, कण कियो रे सिंणगार ?
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
पोते खोलाई हाटड़ी, बेटे कियो रे सिंणगार।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
कण तो खोल्या बडेरो थारा कोथळा, कण कियो रे बणाव ?
आयो हलकारों श्री भगवान रो।

बहुए तो खोल्या श्री जामी थारो कोथळों, बेटे तो कियो रे बणाव।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
बेटां-पोतां थारै मोंकळा, थानै रळमल मंजल पौंचाय।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
हर हर कर थानै ले गया, हर झांझर रै झणकार।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
बेटां-पोतां बडेरो थानै ले गया, जाय उतारया ओ जामी थानै मोम में।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
तूं क्यूं कांपी बण न री लाकड़ी, म्हे हां रामू जी' रा बाप।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
चावल सेऊं बडेरो थानै ऊजळा, हरा मूंगा री धोऊँ दाळ।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
पोली पोंऊ बडेरो थानै लड़छणी, तीवण तीस बत्तीस।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
घी बरताऊँ थानै टोकणै, जालैपुर री धोळी खांड।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
कुल बहू बडेरो थानै थाळ परोसै, जीमो नणदल बाई रा बाप।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
जीम्या जूठ्या बडेरो थे तो रंज लिया, चळू करावा गंगाजल नीर।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
चनण चौकी बडेरो थारो बैसणो, तुलछी री माला थारै हाथ।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
सीरो सेवा बडेरो मोकळो, माह खोपरियां रो भेळ।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
सामी सूरज बडेरा थारो पांतियों, जीमैं सारी नगरी गा लोग।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
गऊ तो दंवा ओ जामी थानै दूजती, पूंछ पकड़ तिर जाय।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
सुरगे बडेरो थारा बाजा बाजिया, खुलग्या धरम किवाड़।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।
दूर देसां री ओ जामी थारी धीवड़ी, आवैली गुवाड़ गुंजाय।
आयो हलकारों श्री भगवान रो।

संदर्भः

1. डॉ. बनवारी लाल सहू, बिश्नोई लोकगीत, पृ. 108
2. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी, बिश्णोई सम्प्रदाय और साहित्य, पृ.967
3. (क) श्री कृष्ण बिश्नोई, बिश्नोई धर्म संस्कार, पृ. 55
   (ख) सम्पादक आचार्य कृष्णानंद, जाभसागर, पृ. 386
   (ग) अमर ज्योति (मासिक पत्रिका), सितम्बर 2014, पृ. 20
4. डॉ. किरण नाहरा, लोकगीता रै लेखे, पृ. 111
5. डॉ. बनवारी लाल सहू, बिश्नोई लोकगीत, पृ. 95 से 97

-डॉ. बनवारी लाल सहू
विभागाध्यक्ष (हिन्दी) से.नि.
एन.एम.पी.जी. कॉलेज, हनुमानगढ़ टाउन (राज.)
मो.: 9414875029

हंस अकेलो आप

बबा बहंण र भाइया, सगपंण माय न बाप।
अंति काळ बेली नहीं, हंस अकेलो आप।
हंस अकेलो आप, पाप न करिस मुकरांणो।
सगपंण कोय न साथि, हंस एकलो पयांणो।
सुकरत होयसी साथि, सदा हरि सूं लिव लाई।
विसंन जपो संसारि, बबा बहंण र भाई॥

-वील्होजी

प्रेम समर्पण चाहै

एक अमीर घराणों भारी।
जां घर जलमी किन्या प्यारी।
लाडो नाम धरायो लैला।
हुई मुठियार खेलत खेला।
उणी गांव बसे एक गुरबौ।
मजनू नांव जलमियो घुरबौ।
बालपणै संग खेले कूदै।
आई जवानी मारग जूदै।
बालपणै री दोस्ती गाढी।
अब तो यह छूटे नह छाड़ी।
प्रेमी प्यार इजहार कराई।
समाज सिरे सूं बा ठुकराई।
अमीर-गरीब, ऊंच-नीच खाई।
प्यार गिणे नहीं खाई भाई।
प्रेमी मजनू पागल हुई जाई।
लैला मन मसोस रह जाई।
बड़ा घरां में घुसणों सोरौ।
बाहर निकलनो अंके दोरौ।
लैला-लैला मजनू पुकारै।
गांव-गली और द्वारे-द्वारे।
भूखा-प्यासा मजनू डोलै।
लैला-लैला मुख से बोलै।
भूखा-प्यासा फिरे सदाई।
देख दशा लैला घबराई।
लैला इक भण्डारों खोले।
जीमे वह जो लैला बोले।
सौ मजनू रोजीना खावै।
नित-नित मजनू बढ़ता जावै।
नकली मजनू भीड़ लगाई।
लैला असली समझ न पाई।
भेष बदल कर लैला आई।
मजनू आगे गुहार लगाई।
लैला बहुत बीमार बतावै।
वैद्य मजनू (रो) कालजो चावै।
नकली मजनू सुण कर भागे।
असली झड़प से आया आगे।
चाकू लाओ कालजो काढू।
मेरी लैला रे चरणा चाढू।
'ऊदा' प्रेम समर्पण चाहै।
स्वार्थ वालो काचो आहै।
बच्चों मत प्रेम में पड़ीयो।
धोखा जाल जगत में रड़ीयो।
मन लगाकर करो पढ़ाई।
रिश्तो घर ढूंढ कर आई।

-डॉ. उदयराज खिलेरी
अध्यापक
गांव-मेघावा, तह-चितलवाना,
जिला-जालोर (राजस्थान)
मो.: 8003238748

बस इतना करना

बहुत ज्यादा
ना ही सही
बस इतना करना
जो घर पर करो
बचत
वैसी हर जगह,
ऑफिस, दुकान में करना
कहीं जलता बल्ब,
चलता पंखा,
या कोई उपकरण
बिना काम के ही तो उसे
बस इतना करना
बंद करना बटन
बिजली की खपत कम करना।
जब बहता
दिखाई दे
पानी
कहीं तो
बस इतना करना
नल को तुम बंद कर देना
बहता पानी रोककर
पानी बचाना।
आ रही है गर्मी
तुम बस
बस इतना करना
पशु पक्षी को पीने का पानी
उपलब्ध करवा देना।
काटे कोई दरख्त
तो तुम बस
उसे रोकना
पर्यावरण की महत्ता
को समझाना
ओर उसे भी कहना कि
पेड़ काटो मत कभी
कर सको तो जीवन
बस इतना करना
बस एक पेड़
अपने जीवन में लगा लेना
पर्यावरण बचा लेना।
कचरा, गंदगी फैलाने वाले
को तुम समझा देना
स्वच्छ वातावरण,
स्वच्छ पर्यावरण की
बस इतना करना
यह अलख तुम
हर इक मन में जगा देना,
तुम एक चलोगे,
तो देखना बड़ा करवा बनेगा
पीछे पीछे
बस मेरे साथियों
सब मिलकर
बस इतना करना
हम हमारा परिवार
समाज, देश ले
शुद्ध हवा
इस खातिर
पर्यावरण बचा लेना
स्वच्छ वातावरण बना लेना।
बस इतना करना
बस इतना करना॥

-सुशील पूनिया
रामा कुंज, 8/368, आर.एच.बी.
कॉलोनी, हनुमानगढ़ जंक्शन - 335512

धार्मिक और सामाजिक पत्रकारिता के हमनवा थे सहीराम जौहर

"आज हमारे पत्रों का उद्देश्य चरित्र निर्माण, समाज सुधार और देशोत्थान का न रहकर केवल व्यापार मात्र रह गया है। लोगों ने पत्रों को रुपया कमाने की मशीन समझ लिया है। बहुत कम ऐसे पत्र हैं, जो देश में निस्वार्थ भाव से निर्माण कार्य कर रहे हैं। शेष सबके सब स्वार्थ में वशीभूत होकर अपने उद्देश्यों से गिर गए हैं। चाहे वह सामाजिक और धार्मिक ही क्यों न हो। इनके अंदर मसाला होता है- गंदे विज्ञापन, चलचित्रों की कहानियां और अश्लील अभिनय के फोटो, जिनको भोला-भाला भारतीय कला कहकर पुकारता है। यही वे चीजें हैं जो देश को पतन की ओर ले जा रही हैं।" यह सभी बातें मैं नहीं कह रहा हूँ बल्कि यह सभी बातें बिश्नोई मंदिर, हिसार से निकलने वाली 'अमर ज्योति' सामाजिक पत्रिका के संपादकीय में लिखी है। उक्त बात आज की नहीं बल्कि 72 वर्षों पूर्व अमर ज्योति के जून 1951 के अंक में लिखी है जो आज के परिपेक्ष्य में कितनी सच्ची सिद्ध हुई है। इस मासिक पत्रिका के संपादक थे- स्वर्गीय श्री सहीराम जौहर।

हम जौहर साहब के विषय में जाने उससे पहले हम पत्रकार और पत्रकारिता के विषय में जान लें तो ठीक रहेगा। पत्रकारिता आधुनिक सभ्यता का एक प्रमुख व्यवसाय है, जिसमें समाचारों का एकत्रीकरण, लिखना, जानकारी एकत्रित करके पहुंचाना, संपादित करना और सशक्त प्रस्तुतीकरण आदि सम्मिलित हैं। आज के युग में पत्रकारिता के अनेक माध्यम हो गए हैं जैसे अखबार, पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन, वेब पत्रकारिता आदि। पत्रकारिता सभी माध्यमों-प्रिंट और नॉन प्रिंट के लिए समाचार संबंधी विषयों के बारे में लिखने का कार्य है। किसी घटना के तथ्य, कारण एवं उपयोगिता की जांच करना एक श्रेष्ठ पत्रकार का मूल कर्तव्य है और ऐसे ही श्रेष्ठ पत्रकार थे- जौहर साहब।

पत्रकारिता में 6 कक्कार महत्वपूर्ण है क्या, कब, कहां, किससे, किसने, क्यों? अंग्रेजी में यह 6 डब्ल्यू हैं। कोई घटना घटी तो क्या घटा? घटना कब घटी? घटना कहां घटी? घटना का जिम्मेदार कौन है? घटना का असर किस पर हुआ? और घटना के पीछे वास्तविक कारण क्या है? घटना के पीछे छिपे मूल तथ्यों पर प्रकाश डालना, पत्रकार और पत्रकारिता का मूल उद्देश्य है, न कि केवल सूचना देना। आदरणीय जौहर साब भी अपने इन मूल उद्देश्यों के लिए संघर्षरत रहे।

पत्रकारिता जनसामान्य को वाद-विवाद का मंच देकर इन्हें किसी घटना के प्रति जागरूक करने का कार्य करती है। जनता को सत्य तक पहुंचाने के कार्य के दिशा में निर्देशिका का कार्य करती है। लेकिन आज पत्रकारिता मुनाफा कमाने, मूल्य निर्माण से दूर पत्रकारिता सेक्स एवं बाजारीकरण के इर्द-गिर्द घूमती है। यही बात जौहर साहब ने आज से 72 वर्ष पहले 'अमर ज्योति' पत्रिका में कही थी।

ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना 1684 ईस्वी में की थी। भारत का पहला समाचार पत्र जेम्स अगस्टन हिक्की का बंगाल गजट (1783) निकला, यह अंग्रेजी में था। भारतीय भाषा में छपने वाला पहला समाचार पत्र बांग्ला भाषा का दिग्दर्शन था, जो 1818 ई. में छपा। भारत में स्वतंत्र पत्रकारिता के जनक समाजसेवी ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय थे। उन्होंने अपना समाचार पत्र संवाद कौमुदी 1821 में प्रकाशित किया। हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र 30 मई सन् 1826 में उदत्त मार्तंड नाम से निकला। इसके पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्ति तक हजारों की संख्या में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं निकली हैं और निकल रही हैं। जौहर साहब ने भी अगस्त सन् 1955 में हिन्दी भाषा में कर्मयुग नामक एक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। आपने इसके प्रथम अंक के संपादकीय में लिखा था- आजादी के बाद हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कोई ठोस प्रयास नहीं किया और हिन्दी भाषा की स्थिति अब भी वैसी ही है जो गुलामी के समय में थी।

आओ, अब हम जाने सहीराम जी के समाज और धर्म के विषय में उनके विचारों को। क्योंकि उन्होंने अपनी पत्रकारिता में धार्मिक और सामाजिक पत्रकारिता की बात की है। उन्होंने कहा है- राजनीतिक क्षेत्र की

ओर दौड़ लगाने वाले लोग कान का मैल निकाल कर सुन लें, जब तक धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रों को भलीभांति समझ कर पार नहीं करेंगे, राजनीति के क्षेत्र में सफलता असंभव है और अगर मिली भी तो महान कष्टों के साथ लिए हुए और क्षणिक। धार्मिक और सामाजिक यह दोनों क्षेत्र राजनीतिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए एक प्रकार के सोपान सिद्ध हुए हैं। उनका धर्म बिश्नोई था और समाज भी बिश्नोई।

अब प्रश्न उठता है कि बिश्नोई कौन होते हैं? जो लोग विष्णु का स्मरण करते हैं और इस धर्म की आचार संहिता के 29 नियमों को मानते हैं वे बिश्नोई या विश्नोई कहलाते हैं। इस धर्म के प्रवर्तक थे श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान। जम्भेश्वर जी का अवतार भादो वदी अष्टमी विक्रमी संवत् 1508 में राज मारवाड़ परगने के नागौर क्षेत्र के पीपासर गांव में हुआ था। यह वही तिथि है, जिसमें द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण का अवतार हुआ था। अब वही तिथि कलयुग की थी। गुरु जांभोजी ने अपनी वाणी में कहा है कि मैं ही विशन हूं और मैंने ही चारों युगों में अपने भक्तों का कल्याण करने के लिए अवतार लिया है। जांभोजी के लौकिक पिताजी का नाम लोहटजी और माताजी का नाम हांसा देवी था। लोहटजी के पिताजी रोलोजी पंवार वंशी राजपूत थे। वे उज्जैन के प्रसिद्ध राजा विक्रमादित्य की 40वीं पीढ़ी में थे। लोहट के छोटे भाई का नाम पूल्होजी और बहन का नाम तांतूजी था। लोहट जी जब वृद्धावस्था में पहुंच चुके थे तब जांभोजी का जन्म हुआ था। इसलिए सभी उनसे बहुत प्रेम करते थे। जांभोजी सात वर्षों तक मौन रहे और अंततः जांभोजी ने एक पुरोहित को संबोधित करके अपनी वाणी का प्रथम शब्द- 'गुरु चीन्हो गुरु चीन्ह पुरोहित, गुरुमुख धर्म बखानी' बोला। जांभोजी आजीवन ब्रह्मचारी रहे और उनके माता-पिता के स्वर्गवास के पश्चात् विक्रमी संवत् 1541 में सम्भराथल धोरे पर अपना आसन जमाया। यहीं पर अपनी वाणी का उपदेश लोगों को देने लगे।

कार्तिक वदी 8, विक्रमी संवत् 1542 में इसी सम्भराथल धोरे पर कलश की स्थापना करके पवित्र पाहल बनाया और 'बिश्नोई धर्म' की आचार संहिता के 29 नियम बनाए। जिन्होंने इन नियमों को मानने की प्रतिज्ञा की, वे पाहल लेकर बिश्नोई बन गए। इस पंथ (धर्म) में अन्य जाति या धर्म के वे सभी लोग सम्मिलित हो सकते थे जो इन नियमों को मानने लगे थे। बिश्नोई धर्म के इन 29 नियमों में कुछ इस प्रकार हैं- सुबह जल्दी उठकर स्नान करना, हवन करना, सुबह-सायं प्रार्थना वंदन करना, सच बोलना, झूठ नहीं बोलना, विष्णु भगवान का स्मरण करना, काम क्रोध लोभ मोह अहंकार को वश में करना, अमल, तंबाकू, भांग, मद, मांस का त्याग करना, 30 दिन सूतक रखना (बच्चे के जन्म पर), 5 दिन ऋतुवंती स्त्री को घर के कार्यों से अलग रखना, नीला वस्त्र न पहनना, हरा वृक्ष न काटना और न काटने देना, जीव हिंसा न करना और न करने देना, अमावस्या का व्रत रखना आदि। जो विष्णु विष्णु (गुरु जाम्भोजी) को स्मरण करता है और उनके द्वारा बताए गए 29 नियमों की आचार-संहिता का पालन करता है, वह बिश्नोई है और ऐसे लोगों के समूह को बिश्नोई समाज कहते हैं। बिश्नोई धर्म और समाज दोनों के साथ जुड़ा है। ऐसे बिश्नोई धर्म और समाज में उत्पन्न हुए थे, सहीराम जौहर।

कार्तिक वदी अष्टमी, विक्रमी संवत् 1542 को ही जैसला गांव, परगना, फलोदी, राज मारवाड़ के अमराराम जाट, जो जंवर गोत्र के थे, गुरु जाम्भोजी के उस महायज्ञ में सम्मिलित हुए और पवित्र पाहल लेकर बिश्नोई बन गए। यह अमराराम जाट श्री सहीराम जौहर (जंवर) के पूर्वज थे जो प्रथम बिश्नोई बने। अमराराम के दो पुत्र थे- पूंजाराम और भींयाराम। पूंजाराम से इनकी (सहीराम जौहर की) खाप चली। पूंजाराम के पौत्र राघोजी विक्रमी सम्वत् 1865 में खैरमपुर, तहसील फतेहाबाद, जिला हिसार में आकर बस गए। शायद उस समय मारवाड़ में भयंकर अकाल पड़ा था। राघोजी के दो पुत्र थे- जीवनराम और भूराराम। जीवनराम के तीन पुत्र और एक पुत्री हुए। जिनमें उदाराम सबसे बड़े बेटे थे, दूसरे रतीराम और तीसरे बृजलाल थे तथा पुत्री का नाम पारो देवी था। उदाराम सहीराम जी के पिताश्री और जीवनराम इनके दादा जी थे। उदाराम के भी तीन पुत्र- भागीरथ, ख्यालीराम, सहीराम और एक पुत्री पीलादेवी

थी। इनके वंशज खैरमपुर और हिसार व आसपास के गांवों में रहते हैं।

सहीराम जी के सबसे बड़े भाई भागीरथ आजादी की लड़ाई में अग्रोहा में शहीद हो गए। कहते हैं अंग्रेजों ने भागीरथ का मृत शरीर भी परिजनों को नहीं दिया। ऐसे समय में मुझे यह शेर याद आ रहा है जो जगदंबा प्रसाद मिश्र 'हितैषी' ने लिखा था-

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा॥

सहीराम जी के दूसरे बड़े भाई ख्यालीराम ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया था। वे क्रांतिकारियों को मिलाने का काम करते थे। जब कोई बड़ा क्रांतिकारी सुभाष चन्द्र बोस आदि हिसार में आते तो वह आसपास के गांवों से ऐसे युवाओं को अपने ऊंट पर बैठाकर हिसार ले आते थे। उस समय आवागमन के ऊंट-बैलगाड़ी आदि साधन थे।

यह बात अधिक समय तक छुपी न रह सकी। जब अंग्रेजी सरकार को पता चला तो ख्यालीराम और उनके ऊंट पर बैठे लोग जो हिसार आ रहे थे उन्हें पकड़ लिया और जेल में डाल दिया। उनके साथ ही ख्यालीराम को भी सजा हुई। कहते हैं यह क्रांतिकारी कोई और नहीं आजाद हिंद फौज की सेना के वीर सिपाही थे। ख्यालीराम अपने अन्य साथियों से मिलने हिसार जाते थे। वहां उनका कोई संगठन बना हुआ था जो देश की आजादी की लड़ाई लड़ने की योजनाएं बनाते रहते थे। उन दिनों वहां सुभाष चंद्र बोस भी हिसार आए हुए थे।

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ। जब पंचायत के चुनाव हुए तो गांव खैरमपुर के लोगों ने चौधरी ख्यालीराम को निर्विरोध गांव का प्रथम सरपंच बनाया। गांव के लोगों ने उनका मान सम्मान रखा और उनकी देश सेवा, समाज सेवा को शिरोधार्य रखा। आज जब हम उसी गांव का सरपंच का चुनाव देखते हैं तो लोग एक-एक वोट के लिए कितना संघर्ष करते हैं। जाति और धर्म के नाम पर कितना प्रोपेगैंडा करते हैं। अब पहले वाला प्रेम और सौहार्द कहां? आजाद भारत की सरकार ने भी चौधरी ख्यालीराम को मान सम्मान दिया और उन्हें आजाद हिंद फौज का एक सैनिक माना और एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में उनकी पेंशन स्वीकार की। उनका नाम आज गांव खैरमपुर के गौरव पट्ट पर अंकित है। सरकार की यह उनको सच्ची श्रद्धांजलि है। कहते हैं जब ख्यालीराम को गिरफ्तार कर लिया गया था, उस समय उनकी बेटी अपने चाचा सहीराम के साथ हिसार में आने-जाने वाले क्रांतिकारियों को भोजन खिलाकर देश की सेवा में अपना योगदान दिया करती थी। उनके इस प्रकार के देश प्रेम को देखकर मुझे गया प्रसाद शुक्ल स्नेही की यह पंक्तियां याद आ रही हैं-

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥

देश के अन्दर स्वतंत्रता आंदोलन जोरों पर था। पंजाब में इसका विशेष अभियान चल रहा था। देश के दीवाने वीर एकजुट होकर आंदोलन चला रहे थे। बंगाल के क्रांतिकारियों के तार पंजाब के ऐसे दीवानों से जुड़ चुके थे। सन् 1919 में ऐसे क्रांतिकारी जलियांवाला बाग अमृतसर में अपनी सभा कर रहे थे। अंग्रेज सरकार के अधिकारी जनरल डायर ने निहत्थों पर गोली चलाने का आदेश दिया। अनेकों लोग शहीद हो गए चारों तरफ कत्लेआम, दंगे-फसाद शुरू हो गए। ऐसे ही माहौल में 5 फरवरी 1923 में सहीराम जी का जन्म, उदाराम जी जंवर के घर, गांव खैरमपुर में हुआ। इनकी माता राजोदेवी गांव कालवास के लांबा परिवार से थी। यह तीन भाई और एक बहन अपने माता-पिता के साथ गांव खैरमपुर में रहते थे।

इनके पिताजी एक साधारण किसान थे। उनके पास कृषि योग्य भूमि कम थी लेकिन फिर भी अपने परिवार का काम चला रहे थे। वे सच्चे और नेक इंसान थे। उनके पास अच्छे पशु गाय, भैंस, ऊंट आदि थे। दूध दही की कोई कमी नहीं थी। वे अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे। वे अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते थे। उनके बच्चों में भी देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। बालक सहीराम में भी यह सब भाव पैदा हो रहे थे। उन्होंने अपने परिवार का माहौल भी देशभक्ति वाला ही देखा था।

बारह वर्ष की आयु में अपना गांव खैरमपुर छोड़कर हिसार शहर में आकर रहने लगे। पढ़ने-लिखने का उन्हें बहुत शौक था। हिसार में ही उनका संपर्क लाला

हरदेव सहाय से हुआ जो पास ही के सातरोड गांव के थे। वे साधन सम्पन्न और एक सच्चे देशभक्त थे, गौर सेवक और समाज सेवक भी थे। उनके पास आजादी के दीवाने क्रांतिकारी विचारों के नौजवान आते रहते थे। सहीराम तो उनके ही भक्त बन गए। हरदेव सहाय जी जो काम बताते थे वे दिन से करते थे। लालाजी के व्यक्तित्व का उनके चरित्र पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। इससे उनके अंदर अपने देश के प्रति प्रेम, अपनी भाषा के प्रति उन्नति की भावना और समाज सेवा की भावना बढ़ी। उन्होंने शहर के अंग्रेजों के अत्याचारों को प्रत्यक्ष देखा। किसानों के हितों के लिए शहीद होने वाले लाला लाजपत राय के विषय में सुना। उन्होंने देश के लिए शहीद होने वाले भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के विषय में जाना। वह क्रांतिकारियों के विषय में भी पढ़ते रहते थे।

'तोपें गर बंद हो तो अखबार निकालो' यह उक्ति उस समय बहुत प्रसिद्ध थी। वे इसलिए अखबार की कार्यविधि को जानना चाहते थे। उन्होंने 19 वर्ष की आयु में हिसार से निकलने वाले पत्र 'ग्राम सेवक' में काम किया। उस समय प्रेस अधिनियम भी बन चुका था। देश की विभिन्न भाषाओं में अनेक समाचार पत्र निकलने लगे थे। जीयालाल जैन ने फारुखनगर से 1884 ईस्वी में 'जैन प्रकाश' नामक पहला अखबार निकाला। कुछ लोग 'हरियाणा-झज्जर' को पहला समाचार पत्र मानते हैं, इसके संपादक दीनदयाल शर्मा थे। 1888 ईस्वी में गुड़गांव से बाबू कन्हैयालाल ने 'जाट समाचार' निकाला। सन् 1942-43 में हाथ से लिखा हुआ अखबार निकाला जिसका नाम 'नव प्रयास' था। हरियाणा के बालमुकुंद गुप्त, पंडित माधव प्रसाद मिश्र, पंडित राधाकिशन मिश्र उन दिनों के प्रसिद्ध पत्रकार थे। उन्होंने भारत मित्र, वैष्योपकारक, सुदर्शन, हिंदुस्तान आदि में काम किया। उस समय हरियाणा पंजाब का ही हिस्सा था (संयुक्त पंजाब) और पत्रकारिता जोरों पर थी। ऐसे में सहीराम जी को बहुत प्रेरणा मिली।

वे पत्रकारिता में पूर्ण रूप से जुड़ गए। इससे उनकी बेसिक पढ़ाई पीछे छूट गई। लेकिन इसी बीच उन्होंने प्रभाकर (हिन्दी) की परीक्षा ईस्ट पंजाब यूनिवर्सिटी से पास की। उन्हें अपने गांव खैरमपुर के समाचार बराबर हिसार में मिलते रहते थे। वे धुन के पक्के थे और क्रांतिकारी विचारों के समर्थक थे। अपने पिता और बड़े भाइयों से उन्हें प्रेरणा मिलती रही। वे सदा किसानों एवं कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहे। उन्होंने सदा उत्पीड़ितों, शोषित वर्ग एवं किसानों की आवाज को हमेशा बुलंद किया और सन् 1948 में आजादी मिलने पर हिसार में 'नवजीवन प्रिंटिंग प्रेस' लगाने की मंजूरी मिल गई। उन्होंने सन् 1946 में अंग्रेजी हुकूमत से अपनी नवजीवन प्रिंटिंग प्रेस लगाने की मंजूरी मांगी थी, परन्तु अंग्रेजी सरकार ने उन्हें प्रेस लगाने की मंजूरी प्रदान नहीं की और तत्कालीन डीसी हिसार को लिखा है कि सहीराम बागियों के परिवार से संबंध रखते हैं जो ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ बगावत करते हैं। वे अपनी मातृभाषा हिन्दी के कट्टर समर्थक थे। वे सदा भारतेंदु हरिश्चन्द्र के इन शब्दों को याद रखते थे-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे ना हिय को सूल॥

देश अब आजाद हो गया था। लेकिन अभी भी भारतीय लोगों पर पाश्चात्य संस्कृति का व्यापक प्रभाव था। जातियां पथभ्रष्ट हो गई और सामाजिक एकता टूट गई थी। लोग अब भी भयभीत, निराश और दुखी थे। वे अभी विभाजन की त्रासदी को भूले नहीं थे। इस क्रांति में गांधीजी एक बड़े राजनैतिक नेता बनकर उभरे थे। उन्हें राजनैतिक क्षेत्र में तो सफलता मिली लेकिन सामाजिक व्यवस्था ज्यों की त्यों बनी रही। इसमें अभी सुधार की आवश्यकता थी। यह सब समाज में जाकर ही किया जा सकता था। ऐसी स्थिति सभी समाजों में थी और बिश्नोई समाज भी इनमें शामिल था। बिश्नोई समाज के कुछ प्रबुद्धजनों ने एक सामाजिक पत्रिका निकालने का मन बनाया। इसमें शामिल थे- सर्वश्री श्रीराम जाणी, मनीराम वकील, मनीराम गोदारा, मुंशी रामरिख जाणी, पतराम सूबेदार, गणेशीराम जाणी, सहीराम जौहर आदि।

क्रमशः आगामी अंक में....

-डॉ. कृष्ण लाल बिश्नोई
बी-111, समता नगर, बीकानेर-334004 (राज.)
मो. 9460002309

शिक्षा से नारी का सशक्तीकरण सम्भव

नारी सदियों से हीन व पिछड़ी रही हैं, इसका मुख्य कारण है उसका अशिक्षित होना। हर तरह से नर के समान सबल होने के बावजूद उसे अबला ही माना जाता रहा है। इस पुरुष प्रधान देश में उसे हमेशा अधिकारों से वंचित रखा गया, जिसमें एक अधिकार शिक्षा पाने का भी था। नारी को अशिक्षित इसलिए रखा गया ताकि पुरुष उस पर अपना प्रभुत्व जमा मनमाना अत्याचार कर सकें। चिरकाल में नारी को अनेक यातनाएं दी गई। मुगलकाल हो या चाहे अंग्रेजी शासन, दोनों ने ही नारी के उत्पीड़न में कोई कमी नहीं छोड़ी। कभी उसे वस्तु की भाँति खरीदा या बेचा जाता है तो कभी पशु की भाँति एक खूँटे से दूसरे खूँटे पर बाँध दिया जाता है। देखिए कितनी निर्ममता है? स्त्री व पुरुष को समाज में प्राय: एक गाड़ी के दो पहियों की संज्ञा दी जाती है। लेकिन उसे सच्चा सम्मान नहीं दिया जाता जिसकी वो अधिकारी है। इतिहास इस बात का गवाह है कि जिस युग में नारी शिक्षित थी उस युग में राष्ट्र उन्नति के शिखर पर था। अत: आज आवश्यकता है कि भारत की हर गली, हर गांव व हर समुदाय की बेटी पढ़ी-लिखी हो और जागरूक हो ताकि अपने अधिकारों को समझ सके और समाज में फैली कुरीतियों, अन्धविश्वास व कुप्रयासों का डट कर मुकाबला करने में सक्षम हो सके। आज की नारी हर क्षेत्र में मौका मिलने पर पूर्ण रूपेण पुरुष के साथ बराबरी कर रही है। नारी को ज्यादा से ज्यादा अवसर प्रदान करवाने चाहिए। आज के समय में नारी किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है चाहे नभ, थल व जल का क्षेत्र हो। नारी सशक्तीकरण के नारे लगाने मात्र से काम नहीं चलेगा। हमें नारी को धरातल पर सक्षम करने व न्यायोचित अधिकार दिलवाने की आवश्यकता पर जोर देना चाहिए। सही मायनों में नारी उत्थान करने के लिए सर्वप्रथम उन्हें शिक्षा के अधिकार से स्वामित्व देना होगा ताकि वे अपने शेष अधिकारों, देश व समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को चूल्हे-चौके तक ही सीमित न समझें। उन्हें अनपढ़ रखकर समझाया जाता है कि परिवार की सेवा ही उनका कर्तव्य है और उनसे मिलने वाली दया उनका अधिकार है, लेकिन यह सच नहीं है। सच्चाई यह है कि जब प्रकृति ने उसे समान अधिकार दिए हैं तो यह पुरुष प्रधान समाज उससे अधिकार छीनने वाला आखिर होता कौन है? और यह जानकारी वे शिक्षा के द्वारा ही हासिल कर सकती है। अगर अधिकारों के बारे में नारी जागरूक होगी तो समाज की उन्नति को कोई रोक नहीं सकता। इतिहास में अनेक उदाहरण है जब पढ़ी-लिखी नारी ने अपने अधिकारों को पाने के लिए जान की बाजी तक लगा दी थी। जैसे रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत, अहित्याबाई का गौरवशाली इतिहास आज भी देश की नारियों में प्राण फूँकने का काम कर सकता है और यह तभी सम्भव होगा जब उन्हें शिक्षा दी जाए। शिक्षा से पूर्ण रूप से देश व समाज का विकास होता है। आज की पढ़ी-लिखी लड़कियाँ सीमा पर, जल में, थल में, पुलिस में, अर्द्ध सैनिक बलों में, पर्वतारोहण में, कृषि क्षेत्र में प्रौद्योगिकी क्षेत्र में, वैज्ञानिक अनुसन्धान क्षेत्र में व अन्य विभिन्न अनगिनत क्षेत्रों में अपने अदम्य साहस का परिचय दे रही हैं। यह सब उन्होंने दया व अनुदान से नहीं, परन्तु अपने बुलन्द हौसलों से हासिल किया है। शोध का क्षेत्र हो या अन्तरिक्ष की ऊँचाइयाँ छूने की कोशिश भी क्यों न हो, पढ़ी-लिखी शिक्षित लड़कियाँ किसी से पीछे नहीं है। आज के बदलते समय में भी लोग ऐसे उदाहरणों के बावजूद भी लड़कियों को यह बहाना बनाकर नहीं पढ़ाना चाहते कि वे पढ़-लिख कर बिगड़ जाएँगी। कुछ संकीर्ण मानसिकता के लोगों कि यह तुच्छ सोच है लेकिन यह मेरी समझ से बाहर है कि जिस शिक्षा को ग्रहण करके लड़के समझदार हो जाते हैं, लड़कियाँ कैसे बिगड़ जाएँगी, पढ़ी-लिखी

लड़कियाँ ज्यादा समझदार होंगी और वे अपने बुरे व भले के बारे में ज्यादा सोचेंगी। शिक्षा पाने के उपरान्त उनका कोई शोषण नहीं कर सकता। कभी-कभी पुरुष प्रधानता की बौखलाहट तो देखने में मिलती है कि वे नारी को ज्यादा महत्व नहीं देना चाहते। इससे तो यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि कुछ लोगों के विचारों में खुलापन नहीं होता। हम अगर किसी व्यक्ति विशेष को अधिकारों से वंचित रखते हैं तो जग जाहिर है कि एक दिन हमें उनके आक्रोश का सामना करना पड़ेगा। सामूहिक तौर से शिक्षित समाज द्वारा ही सर्वांगीण विकास होता है। हमें शिक्षा के प्रचार प्रसार को शहरों तक ही नहीं, वरन दूर-दराज के क्षेत्रों में भी फैलाया है, जहाँ विभिन्न जातियों के लोग निवास करते हैं। उदाहरण के तौर पर आदिवासी क्षेत्रों को ले लीजिए, जहाँ पर शिक्षा न के बराबर है। वहाँ पर हम सुनियोजित ढंग से लड़कियों को साक्षर बना सकते हैं और फिर अनेको कुरीतियों का निवारण कर सकते हैं, जैसे बढ़ती आबादी के बारे में दहेज प्रथा के बारे में, बाल विवाह के बारे में, अन्धविश्वासों के बारे में, जादू टोनों के बारे में उन सबको शिक्षा के माध्यम से सजग कर सकते हैं और उन्हें विश्वास दिला सकते हैं, कि ये सब चीजे लोगों द्वारा मनघड़न्त हैं, सिर्फ समाज को बहकाने के लिए है। आज समाज के सामने दहेज एक ज्वलंत मुद्दा है। जब नारी शिक्षित होगी तभी वह दहेज प्रथा का संगठित होकर सामना कर सकती है और इस दहेज रूपी राक्षस से ही अनेक लड़कियों के जीवन को बचाया जा सकता है। आज आप नित्य अखबारों की सुर्खियों में पढ़ते हैं कि दहेज के कारण लालची परिवार ने एक लड़की को अमानवीय तरीके से मार डाला या उसे आत्महत्या के लिए विवश किया है। जरा सोचिए, यह समाज के लिए कितना घिनौना कृत्य है। कितनी ही मासूम बच्चियाँ दहेज के उत्पीड़न के कारण काल के आगोश में समा जाती है। सरकार व सामाजिक संस्थाओं को मिलकर इस क्षेत्र में कार्य करना होगा ओर इन घिनौनी वारदातों से समाज को छुटकारा दिलाना होगा। बाल विवाह देश के अनेक भागों में आज भी प्रचलित है। आजादी से पहले और उसके बाद भी इसके खात्मे के लिए निरन्तर प्रयास किया जा रहा है। लेकिन यह बुराई आज भी बदस्तूर जारी है। बाल विवाह के खात्मे का अचूक हथियार शिक्षा है। शिक्षा से ही बाल विवाह जैसी बुराइयों का खात्मा किया जा सकता है। कम उम्र की लड़कियों को बाल विवाह की शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा से बचाया जा सकता है।

बाल विवाह को रोकने के लिए प्रत्येक सरकार को सख्त से सख्त कदम उठाने चाहिए। असम सरकार ने कानूनी तौर पर बाल विवाह रोकने की मुहिम छोड़ी है जो कि सराहनीय है। बाल विवाह देश के हर राज्य व केन्द्र शासित प्रदेश में अपने पैर पसारे हुए है। बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराई के खात्मे हेतु देश में 18 साल की उम्र तक शिक्षा को मुफ्त व अनिवार्य किया जाना ब्रह्मास्त्र साबित होगा। पढ़ी-लिखी लड़कियाँ जब एड्स जैसी भयंकर बीमारियों के बारे में जागरूक होंगी, तब बाल विवाह जैसी प्रथाओं पर भी लगाम लगेगी। आज सरकार इन भयंकर बीमारियों को मिटाने के लिए कृतसंकल्प है। अपने नित्य समाचार पत्रों के माध्यम से तथा टी.वी. चैनलों के माध्यम से बतलाया जाता है कि आप इन भयंकर बीमारियों से कैसे निवारण पा सकते हैं? क्या-क्या इनके उपचार हैं? यह समाज को शिक्षा के माध्यम से सजग करने का तरीका नहीं तो और क्या है? पुरुष वर्ग को अपनी भूमिका को ज्यादा से ज्यादा स्पष्ट व कारगर बताना होगा। पुरुष समाज में स्वयं अनेक शोषण वृत्ति के कार्यों को जन्म देता है जैसे कि बाल विवाह। पुरुष को स्वयं उठ और आगे आना होगा और समाज की इन कुरीतियों को उखाड़ फैंकना होगा। पुरुष को नारी का समान करना होगा। नारी को केवल वस्तु न समझकर उसे समान अधिकार दिलाना होगा। आज नारी स्वयं अपना स्थान अपने दम पर बना रही है। साक्षरता के अभियान से नारी-शक्ति में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है। 72% महिलाओं की

आबादी गाँवों में रहती है। शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति काफी सजग हैं। गाँवों में अनेक शिक्षित महिला सरपंचों ने नए-नए आयाम स्थापित किए हैं, जैसे गाँवों में सफाई व शिक्षा का समुचित प्रबन्ध आदि योजनाओं को अमलीजामा पहनाया है। शिक्षित नारी अनपढ़ की बजाए गाँव के विकास के लिए जमा-खर्च राशि एवं चालू वित्त वर्ष की राशि के बारे में अच्छे से समझ सकती हैं। सरकार से समय-समय पर पत्राचार कर सकती हैं व सही तरीके से भावी विकास कार्यों की सूची सकार के संज्ञान में ला सकती हैं। सरकार ने भी नारी सशक्तीकरण को सबलता प्रदान करने के लिए आर्थिक, सामाजिक एवम् राजनैतिक क्षेत्र में अपनी वचनबद्धता दोहराई है। महिला दिवस पर श्रेष्ठ कार्यों हेतु महिलाओं को सम्मानित करना भी एक अच्छी पहल है। इससे महिलाओं के मनोबल को बढ़ावा मिलता है। विभिन्न क्षेत्रों में समय-समय पर महिलाओं की अनेक हुनर हेतु सम्मानित किया जा चुका है। यह सब शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। चाहे लघु उद्योग हो या अन्य तकनीकी शिक्षा सम्बन्धी जानकारियाँ हों, महिलाओं ने सभी क्षेत्रों में अपना परचम लहराया है।

अत: सभी सामाजिक संस्थाओं, सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाओं व निजी क्षेत्र के प्रबुद्ध नागरिकों का, यह दायित्व बनता है कि वे शिक्षा का और तेजी से प्रचार-प्रसार करें। इस पहल से शिक्षा के सर्वांगीण विकास को बल मिलेगा और निश्चित तौर से नारी सशक्तीकरण को बढ़ावा मिलेगा। शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार से वर्तमान में और भविष्य काल में शिक्षा के प्रति लोगों का ज्यादा से ज्यादा रूझान होगा। शिक्षा के क्षेत्र में विश्व में भारत का परचम आज भी विद्यमान है। सदियों से भारत शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है यह विश्व अच्छी तरह जानता है। भारत वर्ष सदैव विश्व गुरु कहलाया है।

पुन: हम सब को मिलकर इस देश को सोने की चिड़िया बनाना है और यह तभी सम्भव होगा जब भारत वर्ष की एक-एक बेटी शिक्षित होगी, जागरूक होगी और शिक्षा के प्रचार-प्रसार में सच्ची लगन और निष्ठा से कार्य करेगी।

अत: हम सभी को मिल शिक्षा के माध्यम से नारी सशक्तीकरण को और मजबूती प्रदान करना है। यह हम सब का पुनीत दायित्व बनता है।

-सत्यपाल शर्मा (एडवोकेट)
हिसार
मो. 9991852540

मैं भी तेंदुलकर बनूंगा!

मम्मी मुझको गेंद दिला दो,
और एक बल्ला तुम ला दो।
अब किसी की नहीं सुनूंगा,
मैं भी तेंदुलकर बनूंगा।

दुनिया भर में नाम होगा।
बड़ा अनोखा काम होगा,
खूब शान से चला करूंगा,
मैं भी तेंदुलकर बनूंगा।

देख-देखकर चौके-छक्के,
सब होंगे तब हक्के-बक्के।

फिर अपने इनाम गिनूंगा,
मैं भी तेंदुलकर बनूंगा।

नहीं खेल में टोका करना,
छोड़ दिया है मैंने डरना।
खुद ही अपनी राह चुनूंगा,
मैं भी तेंदुलकर बनूंगा।

-सुरेन्द्र बिश्नोई 'खीचड़'
रा.उ.मा.वि. जे.डी. (मगरा)
कक्षा-10, तह. नोखा, जिला बीकानेर (राज.) मो. :
मो.: 7851005029

करियर 12वीं के बाद बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई के विभिन्न आयाम

वैसे तो बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई 12वीं की सभी स्ट्रीम के विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध है परंतु इसे अधिकतर वाणिज्य यानि कॉमर्स से जोड़कर भी देखा जाता है।

वाणिज्य क्या है? वाणिज्य मानव जीवन के जीवन यापन की मूलभूत आवश्यकता रोटी, कपड़ा और मकान से संबंधित है। प्राचीन काल से मनुष्य वस्तुओं के आदान-प्रदान से एक दूसरे की जरूरतों को पूरी करता रहा है। फिर मुद्रा के माध्यम से विनिमय में होने लगा, जिससे मुद्रा के संकलन करने, व्यवस्था बनाने, विभिन्न मुद्राओं के विनिमय, राष्ट्र विकास, मांग और पूर्ति, विकास के नियम, जनकल्याण नीति और व्यापार प्रबंधन जैसे अनेक विषय वाणिज्य की परिधि में शामिल होते गए। 12वीं वाणिज्य का विद्यार्थी इन विषयों को सम्मिलित रूप से पढ़ता है और हम इन्हीं विषयों को विस्तृत रूप से आगामी कुछ अंकों में समझने का प्रयास करेंगे।

आदरणीय पाठकवृंद, शिक्षा प्राप्ति के विभिन्न आयामों की चर्चा करते हुए हम पीछे साइंस के विषयों की चर्चा हम कर चुके हैं तथा कुछ कामन आप्शन की स्टडी की चर्चा हम पिछले अंक में कर चुके हैं। अब हम वाणिज्य यानि कॉमर्स विषय की तरफ बढ़ रहे हैं। हम एक-एक करके वाणिज्य के विभिन्न विषयों की महत्वता, विशेषज्ञता को समझने का प्रयास करेंगे। वाणिज्य के क्षेत्र के विशेष विषय CA (चार्टर्ड अकाउंटेंट) CS (कंपनी सेक्रेट्री) CFA (सर्टिफाइड फाइनेंशियल अकाउंटेंट) CFB (सर्टिफाइड स्टॉक ब्रोकर), एक्चुअरियल साइंस, इकोनॉमिक्स और बिजनेस मैनेजमेंट ग्रेजुएशन आदि को समझेंगे। यह सभी क्षेत्र रोजगार उन्मुख है। अधिकतर रोजगार की संभावनाएं निजी क्षेत्र में बनती है। जैसे-जैसे इन विषय विशेष की पढ़ाई के आयामों की चर्चा करेंगे तो साथ-साथ इस से जुड़ी प्रवेश परीक्षाओं, संस्थानों और रोजगार की चर्चा भी करेंगे।

मूल बात: चयन तो हर एक मार्ग की परिणति है। चयन तो करना ही पड़ेगा। परंतु चयन से पूर्व ही यदि शिक्षा विशेष के विभिन्न पहलुओं को चिह्नित कर लिया जाए, जिससे हम अपनी शैक्षणिक क्षमताओं को विस्तृत करने की कार्ययोजना के विन्यास को समझ सके तो समझदारी इसी में ही है।

इसी प्रयास में हम एक विषय को समझेंगे वह है बिजनेस मैनेजमेंट यानि व्यापार प्रबंधन।

बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई

बिजनेस मैनेजमेंट में स्नातक की डिग्री को BBA (बैचलर आफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन) कहा जाता है और BBA की डिग्री को अलग-अलग क्षेत्र के साथ जैसे रिटेल, वित्त प्रबंधन, टूरिज्म, हॉस्पिटैलिटी, लॉजिस्टिक, हॉस्पिटल प्रबंधन आदि विषयों के साथ विशेषज्ञता मे भी किया जाता है। बिजनेस मैनेजमेंट डिग्री 12वीं की सभी स्ट्रीम्स के लिए ओपन रहती है।

बिजनेस मैनेजमेंट की डिग्री 5 वर्षीय इंटीग्रेटेड MBA डिग्री के साथ भी की जाती है। भारत के प्रतिष्ठित संस्थान IIM (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट) के 5 संस्थान IPM (इंटीग्रेटेड प्रोग्राम इन मैनेजमेंट) की डिग्री करवाते हैं। ये संस्थान है IIM इंदौर, IIM रोहतक, IIM रांची, IIM जम्मू और IIM बोध गया। BBA करने के लिए वैसे तो 12वीं में कॉमर्स पढ़ा होना कोई जरूरी नहीं है कोई भी स्ट्रीम से 12वीं कर रहा विद्यार्थी मैनेजमेंट स्टडी में कर अपना करियर बना सकता है परंतु कॉमर्स के विद्यार्थी का रुझान थोड़ा ज्यादा रहता है। BBA करने के लिए भारत में अनेक प्रतिष्ठित संस्थान है। उनमें प्रवेश के लिए विभिन्न प्रवेश परीक्षाएं आयोजित होती है। हम उन प्रवेश परीक्षाओं की चर्चा करेंगे।

IPMAT (इंटीग्रेटेटिड प्रोग्राम इन मैनेजमेंट एप्टीट्यूड टेस्ट) : इस प्रवेश परीक्षा का स्कोर IIM इंदौर, IIM रांची, IIFT (इंडियन इंस्टीट्यूट आफ फॉरेन ट्रेड) आंध्र प्रदेश और निरमा यूनिवर्सिटी, गांधीनगर द्वारा प्रवेश के लिए स्वीकार किया जाता है। BBA करने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता की बात करें तो दसवीं में 60% अंक होने चाहिए तथा 12वीं में पासिंग मार्क्स होने चाहिए। इस परीक्षा के लिए विद्यार्थी का वर्तमान सत्र या उसे पिछले दो सत्रों में 12वीं पास होनी चाहिए। चयन के लिए AT (एप्टीट्यूड टेस्ट) और PI (पर्सनल इंटरव्यू होता) है। परीक्षा में तीन सेक्शन होते हैं QA (क्वांटिटेटिव एप्टिट्यूड) के MCQ प्रश्न VA (वर्बल एबिलिटी) के MCQ प्रश्न तथा QA (क्वांटिटेटिव एप्टिट्यूड) के शॉर्ट आंसर प्रश्न। MCQ में नेगेटिव मार्किंग होती है परंतु शॉट आंसर प्रश्नों में

नेगेटिव मार्किंग नहीं होती। तीनों सेक्शन में एक निश्चित स्कोर करना अनिवार्य है। इसके बाद पर्सनल इंटरव्यू होता है तथा फाइनल मेरिट लिस्ट में एप्टिट्यूड टेस्ट की वेटेज 65% और पर्सनल इंटरव्यू की वेटेज 35% होती है। IIM इंदौर में IPM डिग्री के लिए कुल 150 सीटों पर प्रवेश होता है। इस डिग्री में प्रतिवर्ष की फीस लगभग 5.5 लाख रुपये रहती है यह 3 किस्तों में जमा होती है। फीस के लिए लोन भी मिल जाता है। विद्यार्थी जब यहां से 5 वर्षीय MBA की डिग्री करते हैं तो उनकी प्लेसमेंट की निश्चितता रहती है। वर्तमान वर्ष में प्लेसमेंट की बात करें तो यहां से एवरेज प्लेसमेंट सैलेरी 25 लाख रुपए रही तथा टॉप 100 विद्यार्थियों की एवरेज प्लेसमेंट सैलरी 35 लाख रुपये रही। IIM रांची से IPM डिग्री में कुल 120 सीटों के लिए प्रवेश होता है यहां पर भी पहले 3 वर्षों की फीस लगभग 16 लाख है जोकि किस्तों में जमा होती है। यहाँ से 5 वर्षीय MBA करने के बाद प्लेसमेंट की बात करें तो इस वर्ष भी है। एवरेज प्लेसमेंट 16 लाख रुपए रही। इस वर्ष की परीक्षा के फार्म अभी आरंभ होने हैं।

JIPMAT (जॉइंट इंटीग्रेटेड प्रोग्राम इन मैनेजमेंट एडमिशन टेस्ट): यह परीक्षा IIM जम्मू और IIM बोधगया के लिए NTA (नेशनल टेस्टिंग एजेंसी) द्वारा आयोजित की जाती है। ऑनलाइन मोड की इस परीक्षा में QA (क्वांटिटेटिव एप्टिट्यूड) के 33 प्रश्न DI (डाटा इंटरप्रिटेशन) और LR (लॉजिकल रीजनिंग) के 33 प्रश्न तथा VA (वर्बल एबिलिटी) के 34 प्रश्न होते हैं। कुल 100 प्रश्नों के लिए 400 अंक की परीक्षा होती है। -25% की नेगेटिव मार्किंग रहती है। परीक्षा का समय जिसमें 50 मिनट रहता है। सीटों की बात करें तो IIM जम्मू में 120 सीटों के लिए प्रवेश होता है और IIM बोधगया में भी 120 सीटों के लिए प्रवेश होता है। आरक्षण, केंद्रीय आरक्षण नीति के अनुसार होती है।

IPMAT (इंटीग्रेटेड प्रोग्राम इन मैनेजमेंट एप्टीट्ड टेस्ट): IIM रोहतक अपनी 160 सीटों के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन करता है। यहां प्रवेश के लिए शैक्षणिक योग्यता में 10वीं और 12वीं में 60% अंकों की अनिवार्यता की शर्त है। आयु की सीमा 20 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। परीक्षा में QA, LR, VA के 40 -40 प्रश्न होते हैं। कुल समय 120 मिनट का रहता है। एप्टीट्ड टेस्ट में प्रत्येक प्रश्न चार अंक का होता है, -25% से गलत उतर पर नेगेटिव मार्किंग भी है। एप्टिट्यूड टेस्ट में क्वालिफाइड विद्यार्थियों का ऑनलाइन पर्सनल इंटरव्यू होता है। फाइनल लिस्ट बनाते समय एप्टिट्यूड टेस्ट की वेटेज 45%, पर्सनल इंटरव्यू की वेटेज 15% तथा 10वीं और 12वीं के मार्क्स की वेटेज 40% रहती है। यहाँ 3 साल की फीस लगभग 15.5 लाख रुपए है तथा यहां से MBA करने के बाद यदि इस वर्ष के प्लेसमेंट रिकॉर्ड देखें तो वह भी बेहतरीन है। एवरेज प्लेसमेंट 16 लाख रुपए रहा और टॉप 10% विद्यार्थियों का एवरेज पैकेज 24 लाख रुपये।

प्रमुख संस्थान की वेबसाइट

- Indian Institute of Management, Indore - https://www.iimidr.ac.in/
- Indian Institute of Management, Ranchi - https://iimranchi.ac.in/
- Indian Institute of Management, Bodh Gaya - https://iimbg.ac.in/
- Indian Institute of Management, Jammu - https://www.iimj.ac.in/
- Indian Institute of Management, Rohtak - https://www.iimrohtak.ac.in/
- JIPMAT (Joint Integrated Programme in Management Admission Test) - https://jipmat.nta.ac.in/
- National Testing Agency (NTA) -https://cuet.samarth.ac.in/
- University of Delhi , Delhi - https://admission.uod.ac.in/
- Shaheed Sukhdev College of Business Studies (CBS), Delhi - https://sscbs.du.ac.in/our-college/
- Keshav Mahavidyalaya, New Delhi - https://keshav.du.ac.in/faq
- Shaheed Rajguru College of Applied Sciences for Women, Delhi - https://www.rajgurucollege.com/

And Many More .....

CUET (UG) (सेंट्रल यूनिवर्सिटी एलिजिबिलिटी टेस्ट अंडर ग्रैजुएट): यह प्रवेश परीक्षा अब एक महत्वपूर्ण परीक्षा हो गई है क्योंकि सभी केन्द्रीय व कुछ राज्य व निजी विश्वविद्यालयों में अब इसी परीक्षा के आधार पर प्रवेश मिलता है। इन्हीं केंद्रीय विश्वविद्यालय या अन्य विश्वविद्यालयों में BBA कोर्स के लिए कई प्रतिष्ठित नाम है जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, डॉ. बी.आर. अंबेडकर स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, जामिया मिलिया, जवाहरलाल नेहरू, विश्व भारती आदि कुल 40 यूनिवर्सिटी है जहां से BBA के एडमिशन होते हैं। वर्तमान चर्चा में हम सबसे पहले दिल्ली यूनिवर्सिटी की बात करते हैं।

DU CUET BBA : दिल्ली यूनिवर्सिटी के अन्तर्गत BBA

(FIA) (फाइनेंशियल इन्वेस्टिंग एनालिसिस), BMS (बैचलर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट स्टडी) BA ऑनर्स (बिजनेस इकोनॉमिक्स) की डिग्री के लिए प्रतिष्ठित कॉलेज SSCBS (शहीद सुखदेव सिंह कॉलेज ऑफ बिजनेस स्टडी), केशव महाविद्यालय DDU (दीनदयाल उपाध्याय कालेज) आदि जैसे बड़े नाम CUET परीक्षा के अंतर्गत आते हैं। यह परीक्षा NTA द्वारा आयोजित की जाती है। पिछले वर्ष यह परीक्षा पहली बार आयोजित हुई थी। दिल्ली यूनिवर्सिटी से BBA- करने के लिए 12वीं पास कोई भी विद्यार्थी जा सकता है परंतु 12वीं में मैथ पढ़ा होना एक अनिवार्य शर्त है और कुछ कॉलेज में 12वीं में 60% अंक होने की शर्त रखते है। CUET की BBA/ BMS प्रवेश परीक्षा के लिए विद्यार्थी को 3 सेक्शन की परीक्षा देनी होती है। सेक्शन 1A में 13 भाषाओं में से एक भाषा की परीक्षा होती है, जिस में 45 मिनट में 50 प्रश्न में से कोई 40 प्रश्न करने होते हैं। सेक्शन II में सब्जेक्ट स्पेसफिक परीक्षा होती है। जिसमें से मैथ के अतिरिक्त बिजनेस स्टडी, इकोनॉमिक्स, एंटरप्रेन्योरशिप में से कोई दो सब्जेक्ट का पेपर देना होता है। इस सेक्शन के इन तीन पेपरों में प्रत्येक पेपर के लिए 45 मिनट में 50 में से 40 प्रश्न करने होते हैं। इसी प्रकार सेक्शन III अनिवार्य है। जोकि GK (जनरल अवेयरनेस) का है इसमें 40 मिनट में 75 प्रश्नों में से 60 प्रश्न करने होते हैं। इसमें रिजनिंग, करंट अफेयर आता है। पिछले वर्ष के रिकॉर्ड से मालूम पड़ता है कि दिल्ली यूनिवर्सिटी के टॉप BBA कॉलेज शहीद सुखदेव सिंह कॉलेज में BBA FIA (फाइनेंशियल इन्वेस्टमेंट एनालिसिस) की 45 सीटें अनारक्षित श्रेणी में है और BMS (बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज) में 93 सीट अनारक्षित श्रेणी की है तथा 24 सीटें EWS की हैं। बहुत कम फीस में आप इस प्रतिष्ठित संस्थान से BBA कर सकते हैं और यहां से ग्रेजुएशन करने के बाद बेहतरीन प्लेसमेंट भी प्राप्त करते हैं। SRCAS (W) (शहीद राजगुरु कॉलेज फॉर अप्लाइड साइंस वूमेन) लड़कियों के लिए इस कॉलेज में BBA में आरक्षित श्रेणी में 23 सीटें हैं तथा BMS में 23 सीटें हैं। यहाँ बहुत कम फीस में आप अच्छी प्लेसमेंट ले सकते हैं।

केशव महाविद्यालयः दिल्ली के इस कॉलेज में बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज में 24 सीट हैं यहां से बीकॉम ऑनर्स में भी 77 सीटें अनारक्षित श्रेणी में है, फीस मात्र ⋆16000 है। यहां के मैनेजमेंट विद्यार्थी इंटर्नशिप करने का अवसर पाते हैं तथा डिग्री करने के बाद प्लेसमेंट के अवसर भी बनते हैं।

DDU (दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज): NIRF रैंकिंग में 21वें स्थान पर यह संस्थान है। BMS (बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज) में कुल सीटों में से 24 सीटें अनारक्षित श्रेणी में है। सालाना फीस 30 हजार के आसपास है और डिग्री के बाद यहां से प्लेसमेंट का रिकॉर्ड भी बहुत अच्छा है।

दिल्ली यूनिवर्सिटी के अंतर्गत बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज में प्रवेश के लिए समान्य श्रेणी में लगभग 280 सीटें 10 कॉलेज में है जो कि आर्यभट्ट कॉलेज, कॉलेज फॉर वोकेशनल स्टडी, रामलाल आनंद कॉलेज, रामानुजम कॉलेज आदि है। उपरोक्त चर्चा से हम यह समझ सकते हैं कि देश की राजधानी में एक बेहतरीन स्थान में प्रवेश को लेकर हम अपने शैक्षणिक लक्ष्यों की प्राप्ति के साथ-साथ अन्य जीवन संबंधी उपयोगी पर्सनैलिटी डेवलपमेंट के आयामों को भी सीखते हैं। अपनी चर्चा में अभी हमने कुछ ही संस्थानों को यहां वर्णित किया है। हमें अभी अपनी चर्चा में बिजनेस मैनेजमेंट से जुड़े बहुत सारे संस्थानों की चर्चा करनी है जिसमें दिल्ली की गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी, अन्य सेंट्रल यूनिवर्सिटीज सिंबोसिस, NMIMS, PSG कॉलेज, MCC चेन्नई, AIMA UGT ऐन्ट्रस आदि प्रमुख संस्थानों की चर्चा करनी है। इसके बारे में विस्तार से चर्चा हम आगामी अंक में करेंगे।

इस लेख से मैंने यह समझ को पैदा करने की कोशिश कर रहा हूं कि बात भारत के बेहतरीन संस्थानों की है तो इसकी तैयारी भी उतनी ही जबरदस्त मेहनत से करनी पड़ती है। यदि बिजनेस मैनेजमेंट के क्षेत्र में कैरियर बनाना है तो वह 12वीं के बाद से ही निश्चित करके और अपने ज्ञान के कदम उस मार्ग पर ले जाएं जहां से इसके लिए निरंतर प्रयास होता रहे। इस विषय पर मैं विशेषज्ञता के साथ कार्य कर रहा हूं फिर भी इस लेख में किसी प्रकार की कोई सुधार की जरूरत है तो वह आप मुझे निम्नलिखित संपर्क में माध्यम से सूचित कर सकते हैं।

मुझे आपकी किसी भी जानकारी को बढ़ाने में खुशी महसूस होगी जो कि मेरा धार्मिक दायित्व भी है ।

संवादकर्ता - प्रवीण धारणीया
अध्यक्ष, अ.भा. बिश्नोई युवा संगठन
मो.: 9728400029
E-mail: parveendharnia29@rediffmail.com

ग्रीष्मकालीन अवकाश में आयोजित होंगे जाम्भाणी संस्कार शिविर

हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर समाज की विभिन्न संस्थाओं के साथ मिलकर किशोर वर्ग के लिए जाम्भाणी बाल संस्कार शिविरों का आयोजन ग्रीष्मकालीन अवकाश में कर रही है, जिनका विवरण इस प्रकार है-

दिनांक	स्थान	स्थानीय आयोजक संस्था	संपर्क सूत्र
18-22 मई (गैर अवासीय, छात्र/छात्राओं के लिए)	अमृता देवी वन्य जीव उद्यान, देवड़ा	गुरु जम्भेश्वर पर्यावरण एवं वन्य जीव संरक्षण संस्थान, देवड़ा (सांचौर)	9414373698 7726001324 9783125921
19-23 मई 2023 (आवासीय, केवल छात्रों के लिए)	बिश्नोई छात्रावास, विष्णु कॉलोनी, बाड़मेर	गुरु जम्भेश्वर सेवा संस्थान, बाड़मेर	9460538429 9461155829 9414308176
24-28 मई (आवासीय, केवल छात्रों के लिए)	प्रतिभा पब्लिक उ.मा. विद्यालय, नवा सेक्टर, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर	बिश्नोई समाज, जोधपुर	9587653744 9968057323
24-28 मई (गैर आवासीय, छात्र/छात्राओं के लिए)	रा.उ. प्राथमिक विद्यालय, वाड़ा नया (भीनमाल)	बिश्नोई समाज, वाड़ा नया (भीनमाल)	9660374129 7726001324 9783125921
26-30 मई (आवासीय, केवल छात्रों के लिए)	लालासर साथरी	गुरु जम्भेश्वर पर्यावरण एवं शिक्षण संस्थान, लालासर साथरी	9950003118 9414443290
2-6 जून (आवासीय, केवल छात्रों के लिए)	बिश्नोई मंदिर, फतेहाबाद	बिश्नोई सभा, फतेहाबाद एवं गुरु जम्भेश्वर सेवक दल, फतेहाबाद	9466747929 9416941729
3-9 जून (आवासीय, केवल छात्राओं के लिए)	बिश्नोई मंदिर, सिरसा	बिश्नोई सभा, सिरसा	9812096665 9416305380
11-15 जून (आवासीय, केवल छात्रों के लिए)	मेहराणा धोरा धाम	गुरु जम्भेश्वर मंदिर, मेहराणा धोरा धाम, अबोहर (पंजाब)	9417036029 9166701500
16-20 जून (आवासीय, केवल छात्रों के लिए)	बिश्नोई मंदिर, रायसिंह नगर	बिश्नोई सभा, रायसिंह नगर, श्रीगंगानगर	9001803494 9828295947
21-25 जून (गैर आवासीय, छात्र/छात्राओं के लिए)	अकादमी भवन, जय नारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर	जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर	9462232829 9461682829

इन शिविरों में 13 से 17 वर्ष आयु वर्ग के बच्चे भाग सकते हैं। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क होंगे, शिविर स्थल तक बच्चों के लाने-ले जाने की व्यवस्था अभिभावकों को स्वयं करनी होगी। शिविर में गुरु जम्भेश्वरजी की वाणी, जाम्भाणी साहित्य, बिश्नोई पंथ के इतिहास और परम्परा के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास व कैरियर गाइडेंस बारे जानकारी दी जाएगी। शिविर में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी को नीचे दिए गए गुगल फार्म में अपना ऑनलाइन पंजीकरण 10 मई तक करवाना होगा। शिविर में केवल पूर्व में पंजीकृत व आयोजकों द्वारा अनुमोदित विद्यार्थी ही भाग ले सकेंगे। प्रत्येक शिविर की अधिकतम संख्या 100 शिविरार्थियों की रहेगी। प्राथमिकता उन विद्यार्थियों को दी जाएगी जिन्होंने अब तक किसी शिविर में भाग नहीं लिया है। शिविर के दौरान भाषण, निबन्ध लेखन, गायन, चित्रकारी आदि प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाएंगी। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को समापन समारोह में सम्मानित भी किया जाएगा।

इस गुगल लिंक पर जाकर आप अपने नजदीकी स्थान के संस्कार शिविर के लिए पंजीकरण करें- https://bit.ly/m/jsa.bikaner

-महंत सच्चिदानंद आचार्य
उपाध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी
संयोजक, संस्कार शिविर आयोजन समिति

परीण्डे वितरित कर दिया पक्षियों को बचाने का सदेश

धोरीमना: धोरीमना उपखंड क्षेत्र में गुरु जंभेश्वर वन्यजीव एवं पर्यावरण विकास संस्थान बिश्नोई कमाण्डो फोर्स के जिला अध्यक्ष व स्टेट अवार्डी पर्यावरण प्रेमी शिक्षक जगदीश प्रसाद विश्नोई ने भीमथल परीक्षा केंद्र पर दो सौ परीक्षार्थियों को परीण्डे वितरित कर इसमें हमेशा पानी भरने की शपथ दिलाकर पक्षियों को बचाने का संदेश दिया। केंद्राधीक्षक बिंजाराम सुथार ने इस अवसर पर विद्यार्थियों को पर्यावरण को शुद्ध रखने में पक्षियों के महत्व को समझाते हुए कहा कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए इन बेजुबान जीव जंतुओं का रहना बहुत जरूरी है लेकिन वर्तमान में हो रहे पारिस्थितिक बदलावों के कारण पृथ्वी पर तापमान दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है जिसके कारण गर्मी के मौसम में इन बेजुबान जीव-जंतुओं की अधिकतर मौतें पानी के अभाव में हो जाती है इस कारण हर व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि इन बेजुबान जीव जंतुओं की सेवा के लिए अपनी-अपनी जिम्मेदारी निभाएं। अपने मरुस्थल के क्षेत्र मे गर्मी अधिक पड़ने के कारण यह स्थिति ओर भयावह हो जाती है इस कारण आपको शिक्षक विश्नोई की ओर से निशुल्क परीण्डे दिये जा रहे हैं तो अपने घर के आप पास बड़े पेड़ पर अच्छे तरीके से लगा देना है और प्रत्येक दिन उसमें पानी भरने की जिम्मेदारी आपको निभानी है। यदि आप घर से बाहर चले जाते हो तो पीछे घर के किसी सदस्य को जिम्मेदारी सौंपकर जाना है। पर्यावरण प्रेमी व शिक्षक जगदीश प्रसाद विश्नोई ने विद्यार्थियों को 'जरा इनका भी रखो ध्यान क्योंकि इनमें भी है जान' पंक्ति का अर्थ बताते हुए कहा कि जिस तरह मानव का जीवन है उसी तरह इन मूक प्राणियों का भी जीवन है। हम खाने पानी की व्यवस्था कहीं से कर सकते हैं लेकिन ये बेजुबान जीव जंतु मानव

पर निर्भर है। अत: हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी बनती है की गर्मी के मौसम में इनके लिए चुग्गे पानी की व्यवस्था की जाए, ताकि ये बेजुबान छोटे-मोटे जीव-जंतु भी अपना जीवन बचा सकें। इन परिंडो में सुबह उठते ही पानी भरना आप सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी को ईमानदारी से निर्वहन करते हुए हमें पर्यावरण संरक्षण का संदेश देकर दूसरे लोगों को भी प्रेरित करना है ताकि सभी लोग इस पुण्यार्थ कार्य से जुड़ सके। इस अवसर पर विद्यार्थियों के अलावा बींजाराम सुथार, महन सिंह, लाधुराम बिश्नोई, जगदीश प्रसाद विश्नोई, श्रीराम तेतरवाल, दीपक वर्मा, सुरेश विश्नोई, प्रकाश विश्नोई, सुनील, पंकज सिंह, पारसमल गोसाई सहित विद्यालय के समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

-जगदीश प्रसाद बिश्नोई
रा.उ.मा. विद्यालय, पाबूबेरा, बाड़मेर (राज.)
मो.: 9461045993

बिश्नोई मन्दिर पंचकूला ने मनाया 18वाँ स्थापना दिवस

पंचकुला : बिश्नोई मन्दिर, पंचकूला का 18वाँ स्थापना दिवस 25 मार्च, 2023 को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस उपलक्ष्य में 24 मार्च, 2023 सायं को श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के जागरण व भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें प्रसाद ग्रहण के बाद श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की ज्योति प्रज्ज्वलित करके जागरण का शुभारम्भ हुआ। जागरण में रामकुमार भादू आदमपुर वाले ने श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के भजन, साखियां सुनाई तथा 25 मार्च, 2023 को प्रात: हनुमान लटियाल, गायनाचार्य द्वारा हवन किया गया, जिसमे 120 शब्दों के पाठ करने के बाद श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का अमृतमयी पाहल बनाया गया। ट्राइसिटी के अलावा जीरकपुर, अंबाला और बद्दी में रहने वाले हजारों की संख्या में बिश्नोई, पर्यावरण प्रेमी व श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं और नियमों को मानने

वाले श्रृद्धालु जागरण में पधार कर श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का प्रसाद ग्रहण कर श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का जागरण सुना तथा अगले दिन 25 मार्च, 2023 को हवन में शामिल हो कर अमृतमयी पाहल ग्रहण करके गुरु महाराज का आशीर्वाद लिया।

जागरण में श्री चंद्रमोहन जी, पूर्व उपमुख्यमंत्री हरियाणा सरकार, श्री जगदीश जी कड़वासरा, प्रधान बिश्नोई सभा हिसार व कार्यकारिणी सदस्य, श्री रामस्वरूप जी बेनीवाल, प्रधान बिश्नोई सभा रतिया व कार्यकारिणी सदस्य, बिश्नोई सभा टोहाना व सैकड़ों श्रद्धालुओं ने कार्यक्रम में भाग लिया।

इनके अलावा श्री विजय धीर, सोहनलाल गुर्जर, साई सूद, पीके नंदा पूर्व चीफ आर्किटेक्ट के अलावा कई गणमान्य व्यक्ति जागरण में पधारे। इन सबका प्रधान व कार्यकारणी सदस्यों ने आभार प्रकट किया।

-एल.आर. गोदारा, प्रधान
बिश्नोई सभा, पंचकूला

पर्यावरण संरक्षण संदेश के साथ बिश्नोई समाज का 32वां सामूहिक विवाह सम्मेलन

नीमगांव: हरदा जिले के नीमगांव में श्रीगुरु जम्भेशवर मंदिर में बिश्नोई समाज का 32वां सामूहिक विवाह सम्मेलन पर्यावरण संरक्षण संदेश के साथ 15 जोड़े परिणय बंधन में बंधे संतों के द्वारा विवाह समाज के रीति-रिवाज से सम्पन्न हुआ। हर वर्ष की भांति इस बार भी प्रात: हवन के पश्चात् क्रमश: सुबह 10 बजे से बारात आगमन और स्वागत, प्रीतिभोज, मामेरा, अतिथि सत्कार, वर-वधु के फेरे, कन्यादान एवं शाम के समय नवयुगल जोड़ों को उनके सुखद दाम्पत्य जीवन की बधाई एवं मंगलकामनाओं के साथ विदाई दी। सामूहिक विवाह सम्मेलन में राजस्थान से पधारे पर्यावरण प्रेमी श्री खमुरामजी बिश्नोई और उनकी पर्यावरण सेवक दल ने समारोह में प्रकृति को बचाने के लिए संदेश पट्टिका से ध्यान आकर्षित कराया। प्राकृतिक पत्तल-दोने में भोजन कराया एवं तांबे के बर्तन से जलपान कराकर भोजन को झूठा नहीं छोड़ना, प्लास्टिक प्रतिबंध तथा शुद्ध जल से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। सामाजिक बंधुओं ने पर्यावरण सेवक टीम की भूरी-भूरी प्रशंसा की। महासभा अध्यक्ष देवेंद्र बूड़िया, पूर्व प्रधान हिसार सहदेव कालीराणा, पूर्व प्रधान सेवकदल रामसिंह कस्वां, पतराम लोहमरोड, रमेश बाबल हाल दुबई, भजनलाल लोल, पर्यावरणविद् खमुराम का सेवक दल तथा राजस्थान हरियाणा गुजरात से पधारे अतिथियों का स्वागत

सम्मान मध्यक्षेत्र बिश्नोई सभा के अध्यक्ष आत्माराम पटेल एवं सामूहिक विवाह समिति के अध्यक्ष नानकराम बेनीवाल ने किया।

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2080 ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी–18.5.2023 वीरवार रात्रि 9 बजकर 43 मिनट पर
उतरेगी–19.5.2023 शुक्रवार रात्रि 9 बजकर 23 मिनट पर

सम्वत् 2080 आषाढ़ की अमावस्या

लगेगी–17.6.2023 शनिवार प्रात: 9 बजकर 12 मिनट पर
उतरेगी–18.6.2023 रविवार प्रात: 10 बजकर 07 मिनट पर

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/RNP/01/HSR/2023-25
TECH/WPP/HR-04/HISAR/2023-25

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

गुरु जम्भेश्वर जी प्रोक्त उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक, पांच ऋतुवन्ती न्यारो।
  सेरो करो स्नान, शील सन्तोष शुचि प्यारो।।
- द्विकाल सन्ध्या करो, सांझ आरती गुण गावो
  होम हित चित्त प्रीत सूं होय, बास बैकुण्ठा पावो।।
- पाणी वाणी ईन्धणी दूध, इतना लीजै छाण।
  क्षमा दया हृदय धरो, गुरु बतायो जाण।।
- चोरी निन्दा झूठ बरजियो, बाद न करणो कोय
  अमावस्या व्रत राखणों, भजन विष्णु बतायो जोय।।
- जीव दया पालणी, रूंख लीला नहिं घावै।
  अजर जरै जीवत मरै, वे वास बैकुण्ठा पावै।।
- करै रसोई हाथ सूं, आन सूं पला न लावै।
  अमर रखावै थाट, बैल बधिया न करावै।।
- अमल तमाखू भांग मांस, मद्य सूं दूर ही भागै।
  लील न लावै अंग, देखत दूर ही त्यागे।।

उनतीस धर्म की आखड़ी, हिरदै धरियो जोय।
जाम्भे जी किरपा करी, नाम बिश्नोई होय॥

मुद्रक, प्रकाशक जगदीश चन्द्र कड़वासरा, प्रधान, बिश्नोई सभा हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 मई, 2023 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX® Printers 9896011117